क़ादियान के आर्य और हम

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

क़ादियान के आर्य और हम

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : क़ादियान के आर्य और हम
Name of book : Qadian ke Arya aur Hum
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग : नादिया परवेज़ा
Typing Setting : Nadiya Perveza
संस्करण तथा वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2018 ई०
Edition. Year : 1st Edition (Hindi) 2018
संख्या, Quantity : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

पुस्तक परिचय

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह पुस्तक जनवरी 1907 ई. लिखी। इस पुस्तक को लिखने का कारण यह था कि हुज़ूर ने दिसम्बर 1906 ई. के जलसा सालाना में भाषण देते हुए यह वर्णन किया था कि क़ादियान के समस्त हिन्दू विशेष तौर पर लाला शरमपत और लाला मलावामल मेरे बीसियों निशानों के गवाह हैं और बहुत सी भविष्यवाणियां जो आज से पैंतीस वर्ष पूर्व उनके सामने की गई थीं आज पूरी हुई हैं।

क़ादियान के आर्यों की ओर से एक अख़बार "शुभचिन्तक" निकला करता था। उसमें हमेशा ही इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध अत्यन्त अशिष्ट भाषा प्रयोग की जाती थी। इस अख़बार में लाला शरमपत और लाला मलावामल की ओर सम्बद्ध करके एक घोषणा प्रकाशित की गई कि हम मिर्ज़ा साहिब के किसी भी निशान के गवाह नहीं हैं।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक में अपने बहुत से ऐसे निशानों का विवरण वर्णन किया है जिन का संबंध कथित दोनों आर्य सज्जनों से व्यक्तिगत तौर पर था या कम से कम वे उनके चश्मदीद गवाह थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ये निशान प्रस्तुत करके लिखा-

"मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि यह सब बयान सही है और कई बार लाला शरमपत सुन चुका है और यदि मैंने झूठ बोला है तो ख़ुदा मुझ पर और मेरे लड़कों पर एक वर्ष के अन्दर उसका

दण्ड उतारे। आमीन। झूठों पर ख़ुदा की लानत। ऐसा ही शरमपत को चाहिए कि मेरी इस क़सम के मुक़ाबले पर क़सम खाए और यह कहे कि यदि मैंने इस क़सम में झूठ बोला है तो ख़ुदा मुझ पर और मेरी सन्तान पर एक वर्ष के अन्दर उसका दण्ड डाले। आमीन झूठों पर ख़ुदा की लानत।

(क़ादियान के आर्य और हम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ-442)

ऐसी ही मांग हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने लाला मलावामल से भी की है।

(क़ादियान के आर्य और हम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ-443)

अन्त में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने आर्यों के परमेश्वर और उसकी विशेषताओं के संबंध में आस्थाओं पर जिरह की है और सब से अन्त में इस्लाम की सच्चाई और आर्य धर्म के वास्तविक चित्र को अपनी एक नज़्म (कविता) में प्रस्तुत किया है।

क़ादियान के आर्य

आर्यों पर है सद हज़ार अफ़सोस
दिल में आता है बार-बार अफ़सोस

हो गए वह हक़ से सख़्त नाफ़र्मान
कर दिया दीं को क़ौमों पर क़ुर्बान

वह निशां जिन की रौशनी से जहाँ
हो के बेदार हो गया लर्ज़ां

उन निशानों से हैं ये इन्कारी
पर कहां तक चलेगी तर्रारी

उन के बातिन में इक अंधेरा है
कीनो नख़वत ने आके घेरा है

लड़ रहे हैं ख़ुदा-ए-यक्ता से
बाज़ आते नहीं हैं ग़ोग़ा से

क़ौम के ख़ौफ़ से वे मरते हैं
सौ निशां देखें कब वे डरते हैं

मौत लेखू बड़ी करामत है
पंडित लेखराम
पर समझते नहीं यह शामत है

मेरे मालिक तू इनको ख़ुद समझा
आसमां से फिर इक निशां दिखला
(अमीन)

ताज़ा निशान की भविष्यवाणी

ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं एक ताज़ा निशान प्रकट करूंगा जिसमें महान विजय होगी और सामान्य संसार के लिए एक निशान होगा, और ख़ुदा के हाथों से तथा आकाश से होगा। चाहिए कि प्रत्येक आंख उसकी प्रतीक्षक रहे क्योंकि ख़ुदा शीघ्र ही उस को प्रकट करेगा ताकि वह यह गवाही दे कि यह ख़ाकसार जिसे सभी क़ौमें गालियां दे रही हैं उसकी ओर से है। मुबारक वह जो इस से लाभ प्राप्त करे। आमीन

विज्ञापनदाता- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद[अ] मसीह मौऊद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

क़ादियान के आर्य और हम

आर्य लोगों का एक अख़बार जो क़ादियान से निकलता है और अब शायद जनवरी 1907 ई. से यहां से उसका अन्त है। उसमें मेरे बारे में शरमपत निवासी क़ादियान का हवाला देकर मुझ पर एक विचित्र ग़लत आरोप लगाया गया है। और वह यह कि जो दिसम्बर 1906 ई. के जलसे में एक मज्लिस से मैंने वर्णन किया था कि उन आकाशीय निशानों के जो ख़ुदा ने मुझे प्रदान किए हैं केवल मुसलमान ही गवाह नहीं हैं अपितु इस क़स्बे के हिन्दू भी गवाह हैं। जैसा कि लाला शरमपत और लाला मलावामल आर्य भी जो क़ादियान के निवासी हैं उनको मेरे निशानों की जानकारी है और इस जलसे में मैंने केवल इतना ही वर्णन नहीं किया था अपितु मैंने समस्त मुसलमानों के सामने जो हर ओर से तथा सुदूर देशों से दो हज़ार के लगभग एकत्र थे यह भी वर्णन किया कि क़ादियान के मुसलमानों से नज़र हटाते हुए इस क़स्बे के समस्त हिन्दू भी मेरे निशानों के गवाह हैं। क्योंकि इस युग पर पैंतीस वर्ष के लगभग समय गुज़र गया जब मैंने एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है -

> "कि यद्यपि अब तू अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं परन्तु वह समय आता है कि हज़ारों इन्सानों को तेरी ओर रुजू दूंगा और यद्यपि अब तुझ में कोई आर्थिक शक्ति नहीं परन्तु मैं बहुत से लोगों के हृदयों

में अपना इल्हाम डालूंगा कि अपने धन से तेरी सहायता करें। लोगों के समूह आएंगे और माल देंगे और इतने आएंगे कि क़रीब है कि तू थक जाए। वे प्रत्येक मार्ग से सफ़र करके क़ादियान में आएंगे और उनके आने की अधिकता के कारण रास्ते गहरे हो जाएंगे और जब इस भविष्यवाणी के लक्षण प्रकट होंगे तो शत्रु चाहेंगे कि यह भविष्यवाणी प्रकट न हो और कोशिश करेंगे कि ऐसा न हो परन्तु मैं उनको असफल रखूंगा और अपना वादा पूरा करूंगा।"

और फिर इसके साथ यह भी फ़रमाया-

"मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।"

यह ख़ुलासा है उस भविष्यवाणी का जो आज से छब्बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में छप चुकी है और वास्तव में उस समय से बहुत पहले की भविष्यवाणी है जिसे कम से कम पैंतीस वर्ष होते हैं। तो इस जलसे में मैंने इस भविष्यवाणी की चर्चा की थी और इसके लिए यह अवसर आया था कि जब हम अपनी जमाअत के साथ जो दो हज़ार के लगभग थी अपनी जामिअ मस्जिद में नमाज़ में व्यस्त थे और मेरी जमाअत के प्रतिष्ठत लोग दूर-दूर से आए हुए थे जिनमें अंग्रेज़ी सरकार के भी बड़े-बड़े पदाधिकारी सम्माननीय रईस, जागीदार और नवाब भी मौजूद थे तो ठीक इस हालत में कि जब हम अपनी जामिअ मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहे थे एक अपवित्र प्रकृति वाले आर्य ब्राह्मण ने गालियां देनी आरंभ कीं और नऊज़ुबिल्लाह इन शब्दों

में बार-बार गालियां देता था कि ये सब कंजर इस जगह जमा हुए हैं क्यों बाहर जाकर नमाज़ नहीं पढ़ते और सर्वप्रथम मुझे ही यह गाली दी और बार-बार ऐसे गन्दे शब्दों से याद किया कि अच्छा है कि हम इस पुस्तक को उनके विवरण से पवित्र रखें। हम लगभग दो घंटे तक नमाज़ पढ़ते रहे और वह आर्य क़ौम का ब्राह्मण निरन्तर सख़्त और गन्दे शब्दों के साथ गालियां देता रहा। उस समय कुछ देहात के सिक्ख भी हमारी बड़ी संख्या में जमाअत को देख रहे थे और आश्चर्य की दृष्टि से देखते थे कि ख़ुदा ने एक दुनिया को जमा कर दिया है और उन लोगों ने भी मना किया परन्तु वह अपवित्र प्रकृति वाला आर्य गालियां देने से रुका नहीं और प्रतिष्ठित मुसलमानों को कंजर के गन्दे शब्द से बार-बार याद करता और उकसाता रहा।

यह एक बड़ा दुख था जो ठीक नमाज़ की हालत में मुझे सहन करना पड़ा और यह भी भय था कि हमारी जमाअत में से किसी को जोश पैदा हो परन्तु ख़ुदा का धन्यवाद है कि सब ने सब्र किया आश्चर्य है कि क्यों उसने यह अपवित्र और गन्दा शब्द इस जमाअत के लिए अपनाया। शायद उसे अपने धर्म का नियोग याद आया होगा★ उस समय सरकारी कर्मचारी बटाला का एक डिप्टी

★**हाशिया :-** नियोग आर्य धर्म के अनुसार एक धार्मिक आदेश है जिसकी दृष्टि से एक आर्य की पतिवृता स्त्री पति के जीवित होने के बावजूद कि उसे तलाक़ भी नहीं दी गई एक अन्य आदमी से केवल सन्तान लेने के उद्देश्य से सम्भोग कर सकती है और जब तक ग्यारह लड़के उस ग़ैर आदमी की वीर्य से पैदा हो जाएं इस कार्य में व्यस्त रह सकती है और ऐसी औरत धर्म की दृष्टि से बड़ी पवित्र कहलाती है और ऐसा लड़का मां और अपने काल्पनिक बाप दोनों को नर्क से मुक्ति दिलाने वाला और मुक्ति दाता कहलाता है। इसी से

इन्पेक्टर भी मौजूद था। फिर जब इस आर्य की गालियां सीमा से बढ़ गईं तो प्रतिष्ठित मुसलमानों के दिलों को बहुत कष्ट पहुंचा और यदि वह एक वहशी क़ौम होती तो क़ादियान के समस्त आर्यों के लिए पर्याप्त थी। परन्तु उनके आचरण प्रशंसनीय हैं कि एक नीच प्रकृति आर्य ने इसके बावजूद कि इतनी गन्दी गालियां दीं फिर भी उन्होंने ऐसे धैर्य से काम लिया कि जैसे मुर्दे है। जिनमें आवाज़ नहीं और उस शिक्षा को स्मरण रखा जो बार-बार दी जाती है कि अपने शत्रुओं के साथ सब्र से काम लो।

जब नमाज़ हो चुकी तो मैंने देखा कि इन गन्दी गालियों से बहुत से दिलों को बहुत कष्ट पहुंचा था। तब मैंने उनकी हमदर्दी के लिए उठकर यह भाषण दिया कि कष्ट जो पहुंचता है उसे दिलों से निकाल दो। ख़ुदा तआला देखता है वह अत्याचारी को स्वयं दण्ड देगा। और उस समय मैंने यह भी कहा कि मैं जानता हूं कि क़ादियान के हिन्दू सबसे अधिक ख़ुदा के क्रोध के नीचे हैं क्योंकि ख़ुदा के बड़े-बड़े निशान देखते हैं और फिर ऐसी गन्दी गालियां देते और दुख पहुंचाते हैं। उनको मालूम है कि ख़ुदा ने इस गांव में कुदरत का कैसा बड़ा निशान दिखलाया है। वे इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि आज से छब्बीस-सत्ताईस वर्ष पूर्व मैं कैसी गुमनामी में पड़ा हुआ था। क्या कोई कह सकता है कि उस समय लोगों का यह रुजू भी मेरी जमाअत में शामिल न था और न कोई मुझ से मिलने के लिए आता था और अपनी जायदाद की थोड़ी आय के अतिरिक्त कोई आय भी न थी। फिर उसी युग में अपितु उस से भी पहले जिस को पैंतीस वर्ष से भी कुछ अधिक समय गुज़रता है ख़ुदा ने मुझे यह सूचना दी कि

"हज़ारों लाखों लोग प्रत्येक मार्ग से तेरे पास आएंगे, यहां तक कि सड़कें घिस जाएंगी और प्रत्येक मार्ग से माल आएगा तथा प्रत्येक क़ौम के विरोधी अपने उपायों से ज़ोर लगाएंगे कि यह भविष्यवाणी घटित न हो परन्तु वे अपनी कोशिशों में विफल रहेंगे।" यह सूचना उसी युग में मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में छप कर प्रत्येक देश में प्रसारित हो गई थी।

फिर कुछ समय के पश्चात् इस भविष्यवाणी का धीरे-धीरे प्रकटन आरंभ हुआ। अतः अब मेरी जमाअत में तीन लाख से अधिक लोग हैं★ और आर्थिक विजयों का यह हाल है कि अब तक कई लाख रुपया आ चुका है और लगभग पन्द्रह सौ रुपया और कभी दो हज़ार मासिक लंगर खाना पर व्यय हो जाता है और मदरसः इत्यादि की आय पृथक है। यह एक ऐसा निशान है कि जिससे क़ादियान के हिन्दुओं को लाभ प्राप्त करना चाहिए था क्योंकि वे इस निशान के पहले गवाह थे। उन्हें मालूम था कि मैं इस भविष्यवाणी के समय में कितना अज्ञात और गुप्त था।

यह भाषण था जो उस जलसे में मैंने दिया था और भाषण

★**हाशिया :-** इस पुस्तक के लिखने के समय मिस्र अर्थात् इसकन्दरिया से कल 22 जनवरी 1907ई. को एक पत्र डाक द्वारा मुझे मिला। लिखने वाला एक सम्माननीय बुज़ुर्ग और शहर का है अर्थात् इस्कन्दरिया का, जिसका नाम अहमद ज़ुहरी बदरुउद्दीन है। पत्र सुरक्षित है जो इस समय मेरे हाथ में है। वह लिखते हैं कि मैं आपको यह ख़ुशख़बरी देता हूं कि इस देश में आप के अधीन और आप का अनुकरण करने वाले इतने बढ़ गए हैं कि जैसे बियाबान की रेत पर कंकर। और लिखते हैं कि मेरे विचार में कोई ऐसा शेष नहीं जो आप का अनुयायी नहीं हो गया। इसी से

के अन्त में मैंने यह भी वर्णन किया था कि इस निशान के सब आर्यों से बढ़कर गवाह लाला शरमपत और लाला मलावामल निवासी क़ादियान है क्योंकि उनके सामने पुस्तक बराहीन अहमदिया जिस में यह भविष्यवाणी है प्रकाशित हुई है। अपितु बराहीन अहमदिया के प्रकाशित होने से पूर्व उस समय में जबकि मेरे पिता जी का निधन हुआ था यह भविष्यवाणी इन हर दो आर्यों को बताई गई थी, जिस का संक्षिप्त वर्णन यह है कि मेरे पिता जी के निधन की सूचना ख़ुदा तआला ने मुझे इन शब्दों में दी थी कि وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ अर्थात् क़सम है आकाश की और क़सम है उस दुर्घटना की जो सूर्य अस्त होने के बाद होगी और साथ ही समझाया गया था कि इस भविष्यवाणी का मतलब यह है कि तुम्हारा पिता सूर्य अस्त होने के साथ ही मृत्यु पाएगा। यह इल्हाम बतौर मातमपुर्सी (मृत्योपरांत शोकाकुल परिवार से सहानुभूति प्रकट करना) के था जो अपने विशेष बन्दों से ख़ुदा की आदत में सम्मिलित है। और जब यह सुनकर संकोच और ग़म पैदा हुआ कि उनकी मृत्यु के पश्चात् हमारी जीविका के अधिकांश माध्यम जो उनके अस्तित्व से सम्बद्ध हैं समाप्त हो जाएंगे। तब यह इल्हाम हुआ-

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ

अर्थात् क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है? ख़ुदा की इस वह्यी में स्पष्ट तौर पर सूचना दी गयी थी कि समस्त आवश्यकताओं का ख़ुदा स्वयं अभिभावक होगा। तो इस इल्हाम के अनुसार सूर्य अस्त होने के बाद मेरे पिता जी मृत्यु पा गए और उनके माध्यम से जो हमारी जीविका के साधन थे, जैसे पेन्शन और

इनाम इत्यादि सब पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। इन्हीं दिनों में जिन पर पैंतीस वर्ष का समय गुज़र गया है। मैंने इस इल्हाम को अर्थात् اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ को मुहर में ख़ुदवाने के लिए कहा और लाला मलावामल आर्य को उस मुहर के खुदवाने के लिए अमृतसर में भेजा और केवल इसलिए भेजा ताकि वह और लाला शरमपत उसका मित्र दोनों इस भविष्यवाणी के गवाह हो जाएं। अत: वह अमृतसर गया और हकीम मुहम्मद शरीफ़ कलानौरी के माध्यम से पांच रुपए मज़दूरी दे कर मुहर बनवा लाया जिस का नक़्शा اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ है जो अब तक मौजूद है। यह इल्हाम लगभग पैंतीस या छत्तीस वर्ष का है जिसके ये दोनों आर्य सज्जन गवाह हैं और उनको मालूम है कि उस समय मेरी क्या हैसियत थी। फिर उस समय में जबकि बराहीन अहमदिया जिस में उपरोक्त कथित इल्हाम दर्ज हैं। अमृतसर में पादरी रजब अली के प्रेस में छप रही थी। इन दोनों आर्यों को भली भांति ज्ञात है कि मैं कैसे गुमनामी में जीवन व्यतीत कर रहा था, यहां तक कि कई बार ये दोनों आर्य मेरे साथ अमृतसर जाते थे और एक सेवक के अतिरिक्त दूसरा आदमी नहीं होता था और कभी केवल लाला शरमपत ही साथ जाता था। ये लोग क़सम खा कर कह सकते हैं कि उस युग में मेरी गुमनामी की हालत किस स्तर तक थी? न क़ादियान में मेरे पास कोई आता था और न किसी शहर में मेरे जाने पर कोई मेरी परवाह करता था और मैं उनकी दृष्टि में ऐसा था जैसा कि किसी का न होना और होना समान होता है।

अब वही क़ादियान है जिसमें हज़ारों आदमी मेरे पास आते हैं और वही शहर अमृतसर और लाहौर इत्यादि हैं जो मेरे वहां जाने की

हालत में सैकड़ों आदमी स्वागत के लिए रेल पर पहुंचते है बल्कि कई बार हज़ारों लोगों तक संख्या पहुँचती है। तो सन् 1903 ई. में जब मैंने जेहलम की ओर सफर किया तो सब को मालूम है कि लगभग ग्यारह हज़ार आदमी स्वागत के लिए आए थे। ऐसा ही क़ादियान में सैकड़ों मेहमानों के आने का एक सिलसिला जो अब जारी है उस युग में इस का नामोनिशान न था और क़ादियान के समस्त हिन्दुओं को विशेष तौर पर लाला शरमपत और मलावामल को (जो अब क़ौम के दबाव के नीचे आकर ख़ुदा के निशानों से इन्कारी होते हैं।★ बहुत अच्छी तरह मालूम है उन दिनों में हमारा मर्दाना मकान केवल वीराना और खाली था और कोई हमारे पास नहीं आता था। हां ये लोग दिन में दो तीन बार या कम अथवा अधिक आ जाते थे। ये सब बातें वे क़सम खाकर वर्णन कर सकते हैं।

तो जलसे के दिन मेरे भाषण का यही ख़ुलासा था कि क़ादियान के आर्यों पर ख़ुदा तआला का समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है। विशेष तौर पर इन दोनों आर्यों पर तो अच्छी तरह हुज्जत पूरी हो चुकी है जो बहुत से निशानों के चशमदीद गवाह हैं। परन्तु वे लोग उस ज़बरदस्त शक्तियों वाले ख़ुदा से नहीं डरते जो एक पल में मिटा सकता है। और जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूं इस भविष्यवाणी

★**हाशिया :-** मुझे निश्चित तौर पर ज्ञात नहीं कि वास्तव में लाला शरमपत और मलावामल सचमुच उन समस्त निशानों से इन्कारी हो गए हैं जिन्हें वे देख चुके हैं केवल आर्य अखबार के सन्दर्भ से लिखता हूं और मैं आशा नहीं रखता कि कोई मनुष्य ख़ुदा तआला से ऐसा निडर हो जाए कि अपनी चश्दीद गवाहियों से इन्कारी हो जाए। प्रत्येक व्यक्ति का अन्ततः ख़ुदा तआला से मामला है। इसी से

के साथ यह भविष्यवाणी भी पूरी हो गई कि जो उसी पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज थी और उसी युग में जिसको लगभग छब्बीस वर्ष गुज़र चुके हैं समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान में प्रकाशित हो चुकी थी। अर्थात् यह कि शत्रु बहुत ज़ोर लगाएंगे ताकि यह उत्थान और यह निशान और यह लोगों का रुजू प्रकटन में न आए और लोग आर्थिक सहायता न करें। परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला अपनी भविष्यवाणी को पूर्ण करेगा और वे सब असफल रहेंगे। और यह भविष्यवाणियां न केवल अरबी में हैं अपितु अरबी, उर्दू, अंग्रेज़ी, फारसी और इब्रानी भाषा में बराहीन अहमदिया में मौजूद हैं।

फिर जब कुछ वर्षों के पश्चात् इन भविष्यवाणियों के लक्षण आरंभ होने लगे तो विरोधियों में रोकने के लिए जोश पैदा हुआ। क़ादियान में लाला मलावामल ने लाला शरमपत के मशवरे से विज्ञापन दिया जिस को लगभग दस वर्ष गुज़र गए। इस विज्ञापन में मेरे बारे में लिखा कि यह व्यक्ति केवल मक्कार और धोखेबाज़ है और केवल दुकानदार है। लोग इस का धोखा न खाएं, आर्थिक सहायता न करें अन्यथा अपना रुपया व्यर्थ करेंगे। इस विज्ञापन से इन आर्यों का उद्‌देश्य यह था ताकि लोग रुजू से रुक जाएं। और आर्थिक सहायता से मुंह फेर लें। परन्तु संसार जानता है कि उस विज्ञापन के युग में मेरी जमाअत साठ या सत्तर आदमी से अधिक न थी। यह बात सरकारी रजिस्टरों में भी भली भांति मालूम हो सकती है कि उस युग में अधिक से अधिक तीस या चालीस रुपया मासिक आय थी परन्तु उस विज्ञापन के बाद जैसे आर्थिक सहायता का एक दरिया जारी हो गया और आज तक कई लाख लोग बैअत में दाखिल हुए और

अब तक हर महीने में पांच सौ के लगभग लोग बैअत में दाख़िल हो जाते हैं। इस से सिद्ध होता है कि मनुष्य ख़ुदा का मुक़ाबला नहीं कर सकता। मेरा यह बयान सबूत के बिना नहीं। मलावामल का विज्ञापन अब तक मेरे पास मौजूद है जो लाला शरमपत के मशवरे से लिखा गया था। सरकारी अतिथि गणना तो हमारे सिलसिले के लिए निर्धारित ही है। इस विज्ञापन से पहले कितने मेहमान आते थे, कितना रुपया आया था और बाद में ख़दुा की कितनी सहायता सम्मिलित हो गयी। यह बात मनी आर्डर के रजिस्टरों तथा अतिथि गणना के पेपर्स से प्रकट हो सकती है कि उस युग में जबकि मलावामल ने विज्ञापन प्रकाशित किया मेरी जमाअत कितनी थी। उन पेपर्स से जो पुलिस के द्वारा सरकार में पहुंचते हैं भली भांति निर्णय हो सकता है और सफ़ाई के साथ प्रकट हो सकता है कि उस युग में जबकि मलावामल ने लोगों को रोकने के लिए विज्ञापन दिया मेरी जमाअत कितनी थी और कितना रुपया आता था। और फिर बाद में कितनी उन्नति हुई। मैं सच-सच कहता हूं कि इतनी उन्नति हुई कि जैसे एक बूंद से दरिया बन जाता है और यह उन्नति बिल्कुल असाधारण और चमत्कार पूर्ण थी। हालांकि न केवल मलावामल ने अपितु प्रत्येक शत्रु ने इस उन्नति को रोकने के लिए पूरा ज़ोर लगाया और चाहा कि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी झूठी सिद्ध हो। अन्त में परिणाम यह हुआ कि एक दूसरी भविष्यवाणी पूरी हो गई। अर्थात् जैसा कि ख़ुदा तआला ने पहले से फ़रमाया था शत्रु लोगों के रुजू को रोक न सके।

यदि मनुष्य अपने अन्दर लज्जा और शर्म का कुछ तत्त्व रखता हो तो यह समझ सकता है कि यह गहरे से गहरी ग़ैब की बातें जो

ख़ुदाई क़ुदरतों से भरी हैं मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर हैं, और सोच सकता है कि यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो मनुष्यों की विरोधपूर्ण कोशिशें अवश्य सफल हो जातीं। इन विज्ञापनों का यदि कुछ परिणाम हुआ तो यह हुआ कि वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो ख़ुदा तआला ने पहले से फ़रमाया था कि शत्रु जान तोड़ ज़ोर लगाएंगे कि उत्थान और ख़ुदाई सहायता तथा लोगों के रुजू करने की भविष्यवाणी पूरी न हो परन्तु वह पूरी हो जाएगी। और विचित्र बात यह है कि केवल मलावामल ने ही ज़ोर नहीं लगाया अपितु आर्य लोगों का वह पंडित जिसके प्राण को ख़ुदा की भविष्यवाणी ने ले लिया अर्थात् लेखराम वह भी अपनी तुच्छ आयु का भाग इन्हीं लेखों में खो गया ताकि बराहीन अहमदिया में लाखों लोगों के रुजू और लाखों रुपए की आय के बारे में प्रकाशित हो चुकी थी। अन्ततः परिणाम यह हुआ कि जैसा कि ख़ुदा तआला ने मुझे पांच वर्ष पूर्व सूचना दी थी कि वह अपनी गालियों के बदले में छः वर्ष की मीआद में क़त्ल किया जाएगा। वह अभागा उस भविष्यवाणी को पूरा करके राख का ढेर हो गया।

ऐसा ही ईसाइयों ने भी इस भविष्यवाणी को रोकने के लिए बहुत ज़ोर लगाया और उनके विज्ञापन भी अब तक मेरे पास मौजूद हैं। फिर मुसलमान जिन का अधिकार था और जिन का गर्व था कि मुझे स्वीकार करते उन्होंने भी इस भविष्यवाणी को रोकने के लिए जो बराहीन अहमदिया में मेरी भावी उन्नति, प्रतिष्ठा तथा लोगों के रुजू के बारे में छब्बीस वर्ष से दर्ज थी और लगभग पैंतीस वर्ष से मौखिक तौर पर प्रसारित हो चुकी थी......... नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया

यहां तक कि मैं सोचता हूं कि एक लाख से अधिक प्रतियां उनकी ओर से ऐसी निकली होंगी जिसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया कि यह व्यक्ति काफ़िर है, दज्जाल है, बेईमान है कोई इस की ओर मुख न करे और कोई इसकी सहायता न करे अपितु कोई हाथ न मिलाए और अस्सलामो अलैकुम न करे और जब मर जाए तो मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न न किया जाए। परन्तु उन विज्ञापनों का कैसा विपरीत प्रभाव हुआ जिस से ख़ुदा तआला की क़ुदरत दिखाई देती है। इनके बाद कई लाख आदमियों ने मेरी बैअत कर ली और कई लाख रुपया आया और दूसरे असंख्य उपहार हर ओर से आए और ख़ुदा के स्वाभिमान और क़ुदरत ने उनके मुंह पर वे तमांचे मारे कि प्रत्येक मैदान में उनको पराजय प्राप्त हुई और प्रत्येक मुबाहल: में मौत या अपमान उन के भाग में आया। ये समस्त विज्ञापन जो आर्यों की ओर से निकले और ईसाइयों तथा मुसलमानों की ओर से प्रकाशित हुए मेरे कुछ सन्दूक़ों में मौजूद हैं जिन में हज़ारों गालियों के साथ जो चूहड़ों, चमारों की गालियों से बढ़कर हैं। मुझे मक्कार, धोखेबाज़ी, ठग, दज्जाल, नास्तिक और बेईमान करके याद किया गया और इसलिए जमा रखे गए ताकि किसी को इन्कार न हो सके।

जब मैं एक ओर बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी देखता हूं कि यद्यपि तू अब अकेला है तेरे साथ कोई भी नहीं परन्तु वह समय आता है बल्कि नज़दीक है कि लाखों इन्सान तेरे साथ हो जाएंगे और अपने प्रिय मालों से तेरी सहायता करेंगे और हर एक क़ौम के शत्रु ज़ोर लगाएंगे कि यह भविष्यवाणी पूरी न हो परन्तु मैं उन्हें असफल रखूंगा और मैं तुझे हर एक तबाही से बचाउंगा

यद्यपि कोई बचाने वाला न हो और दूसरी ओर इस भविष्यवाणी के अनुसार प्रत्येक क़ौम के शत्रुओं की भविष्यवाणी को रोकने के लिए पूरी कोशिश को देखता हूं। और फिर देखता हूं कि शत्रुओं के कठोर हस्तक्षेप के बावजूद वह भविष्यवाणी ऐसी पूरी हो गयी कि यदि आज वे समस्त बैअत करने वाले एक विशाल मैदान में एकत्र किए जाएं तो एक बड़े बादशाह की सेना से भी अधिक होंगे। तो उस अवसर पर मुझे आत्म विस्मृति से रोना आता है कि हमारा ख़ुदा कैसा शक्तिमान ख़ुदा है कि जिसके मुंह की बात कभी टल नहीं सकती यद्यपि सम्पूर्ण संसार शत्रु हो जाए और उस बात को रोकना चाहे।

यह वह वर्णन था जो उस जलसे में मैंने किया था। अब मैं पूछता हूं कि क्या क़ादियान के हिन्दुओं को इस भविष्यवाणी और इसके पूरे होने की कुछ ख़बर नहीं? क्या लाला शरमपत और लाला मलावामल इस भविष्यवाणी से अनभिज्ञ हैं? और क्या "आर्य साहिबान अपने धर्म में इस का कोई प्रमाणित उदाहरण बता सकते हैं और क्या" वे इस से इन्कार कर सकते हैं कि जिस युग में भविष्यवाणी प्रकाशित की गई थी उस युग में मेरी ओर किसी का रुजू न था। लानती है वह व्यक्ति जो झूठ बोले और मुर्दार है वह कमीना जो सच को छुपाए ऐसे इन्सान यद्यपि जीभ से कहें कि ख़ुदा है परन्तु वास्तव में वे ख़ुदा के इन्कारी ही होते हैं। किन्तु ख़ुदा अपनी शक्तियों से प्रकट करता है कि मैं मौजूद हूं। मैं आज से नहीं अपितु हमेशा से जानता हूं कि सामान्यतया क़ादियान के हिन्दू इस्लाम के कट्टर शत्रु और अंधकार से प्रेम करते हैं। वे प्रकाश को देखकर और भी अंधकार की ओर दौड़ते हैं। मनो उनके नज़दीक ख़ुदा नहीं और ख़ुदा ने उन को लेखराम

का बड़ा निशान दिखाया था परन्तु उन्होंने उस से कोई सीख प्राप्त नहीं की। और यह कितना साफ निशान था जिसमें यह ख़बर दी गई थी कि लेखराम स्वाभाविक मृत्यु से नहीं मरेगा अपितु वह छः वर्ष के अन्दर क़त्ल किया जाएगा और ईद के दिन के बाद जो दिन होगा उसमें यह घटना होगी। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया। और इस भविष्यवाणी का कारण केवल यह था कि वह इस्लाम धर्म को झूठा समझता था और बहुत गालियां देता था। तो ख़ुदा ने मुझे सूचना दी कि वह तो मांस अर्थात् जीभ की छुरी इस्लाम पर चला रहा है परन्तु ख़ुदा तआला लोहे की छुरी से उसका अन्त करेगा। अतः ऐसा ही घटित हुआ। मैंने विज्ञापन दिया था कि हे आर्यो! यदि तुम्हारे परमेश्वर में कुछ शक्ति है तो उसके पास दुआ करो और प्रार्थना करके लेखराम को बचा लो। परन्तु तुम्हारा परमेश्वर उसे बचा न सका और उसने मेरे बारे में यह भविष्यवाणी की थी कि यह व्यक्ति तीन वर्ष तक मर जाएगा। ख़ुदा ने उसकी भविष्यवाणी झूठी सिद्ध की और हमारा ख़ुदा विजयी रहा। फिर उसने अपनी पुस्तक ख़ब्त-ए-अहमदिया में मेरे साथ मुबाहलः किया अर्थात् दुआ की कि हम दोनों में से जिसका धर्म झूठा है वह मर जाए। अन्ततः वह दुआ के बाद स्वयं ही मर गया और इस बात पर मुहर लगा गया कि आर्य धर्म सच्चा नहीं है और इस्लाम सच्चा है। उसने अपने मरने से मेरे बारे में यह भी गवाही दे दी कि मैं ख़ुदा की ओर से हूं।

हमें यह अफ़सोस कभी नहीं भूलेगा कि लेखराम की इस मौत का असल कारण क़ादियान के हिन्दू ही हैं। वह केवल अज्ञान था। और जब वह क़ादियान में आया तो क़ादियान के हिन्दुओं ने मेरे

बारे में उसे यह कहा कि यह झूठा और धोखेबाज़ है। इन बातों को सुनकर वह बहुत दिलेर हो गया और बहुत बिगड़ गया और अपनी जीभ को गालियों में छुरी बना लिया। तो वही छुरी उस का काम कर गई। ख़ुदा के चुने हुए और पवित्र नबी को गालियां देना और सच्चे को झूठा कहना अन्त में इन्सान को दण्यनीय कर देता है। यदि लेखराम★ नर्मी और विनम्रता ग्रहण करता तो बचाया जाता। क्योंकि

★**हाशिया :-** यहां यह क़ुदरत की घटना स्मरण रखने योग्य है कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के बारे में यह भविष्यवाणी थी कि यदि वह सच की ओर रुजू नहीं करेगा तो पन्द्रह महीने में मर जएगा और लेखराम के बारे में यह भविष्यवाणी थी कि वह छः वर्ष के अन्दर क़त्ल किया जाएगा। फिर चूंकि अब्दुल्लाह आथम भविष्यवाणी के दिनों में बहुत रोता रहा और उसके हृदय पर सच की श्रेष्ठता विजयी हो गई थी और उसने इस अवधि में कोई बुरा शब्द मुख से न कहा। इसलिए ख़ुदा ने जो कृपालु और दयालु है उसकी मीआद को बढ़ा दिया और वह कुछ और थोड़ी अवधि तक जीवित रह कर मर गया। परन्तु लेखराम भविष्यवाणी सुनने के पश्चात् गालियां देना आरंभ कीं जैसा कि नीचे हिन्दुओं की आदत है इसलिए उसकी असल मीआद भी पूरी न होने पाई और अभी मीआद में एक वर्ष शेष था कि भविष्यवाणी के अनुसार क़त्ल किया गया ऐसा ही अहमद बेग की भविष्यवाणी पूरी होने के बाद अर्थात् मरने के बाद उसके वारिसों ने बहुत ग़म और भय व्यक्त किया, इसलिए ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार उसके दामाद की मृत्यु में विलम्ब डाल दिया, क्योंकि समस्त नबियों के मुख से ख़ुदा तआला का यह वादा है कि जब किसी विपदा के उतरने की किसी के बारे में कोई भविष्यवाणी हो और वे लोग डर जाएं उनका हृदय भय से भर जाए तथा ख़ुदा से दुआ दान-पुण्य इत्यादि से दया चाहें तो ख़ुदा तआला दया करता है और इसी नियम के अनुसार प्रत्येक क़ौम के लोग किसी विपदा के समय दान-पुण्य किया करते हैं। इसी से

ख़ुदा कृपालु और दयालु है और दण्ड देने में धीमा है। परन्तु इन लोगों ने उसे बड़ा धोखा दिया। मैं जानता हूं कि उस की मौत का गुनाह क़ादियान के हिन्दुओं की गर्दन पर है और मुझे अफ़सोस है कि इन लोगों ने उस से बहुत ही बुरा व्यवहार किया। ये लोग मुंह से तो कहते हैं कि परमेश्वर है परन्तु मैं नहीं मानता कि उनके हृदय भी परमेश्वर पर ईमान लाते हैं। उन का विचित्र धर्म है कि पृथ्वी पर जितने पैग़म्बर गुज़रे हैं सब को गन्दी गालियां देते हैं और झूठा जानते हैं। जैसे केवल छोटा सा देश आर्यवर्त का ख़ुदा के तख़्त का स्थान रहा है और दूसरे देशों से ख़ुदा ने कुछ संबंध नहीं रखा या उन से अज्ञात रहा है परन्तु ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में यह फ़रमाया है कि प्रत्येक देश में उसके पाग़म्बर आते रहे हैं। इस प्रकार हिन्दुस्तान में भी ख़ुदा के पवित्र पैगम्बर और उसका कलाम पाने वाले गुज़रे हैं और ऐसा ही चाहिए था क्योंकि ख़ुदा समस्त देशों का है न केवल एक देश का। न मालूम किस शैतान ने इन लोगों के हृदयों में यह फूंक दिया है कि वेद के अतिरिक्त ख़ुदा की समस्त किताबें झूठी हैं और नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा का नबी मूसा अलैहिस्सलाम और ख़ुदा का प्रिय ईसा अलैहिस्सलाम और ख़ुदा का चुना हुआ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब झूठे और मक्कार गुज़रे हैं। हमारी शरीअत इन को सुलह का सन्देश देती है और इनकी अपवित्र आस्थाएं युद्ध की प्रेरणा देकर हमारी ओर तीर चला रहे हैं। हम कहते हैं कि हिन्दुओं के बुज़ुर्गों को मक्कार और झूठा मत कहो परन्तु यह कहो कि हज़ारों वर्षों के गुज़रने के बाद ये लोग असल धर्म को भूल गए। परन्तु हमारे मुकाबले पर ये अपवित्र प्रकृति वाले लोग हमारे चुने हुए

नबियों को गन्दी गालियां देते हैं और उन्हें झूठ गढ़ने वाला तथा झूठा समझते हैं। क्या कोई आशा कर सकता है कि ऐसे हिन्दुओं से सुलह हो सके। इन लोगों से अच्छे सनतान धर्म के अधिकतर लोग सदाचारी हैं जो हर एक नबी को सम्मान की दृष्टि से देखते और विनयपूर्वक सर झुकाते हैं। मेरी समझ में यदि जंगलों के दरिन्दे और भेड़िए हम से सुलह कर लें और बुराई छोड़ दें तो यह संभव है परन्तु यह सोचना कि ऐसी आस्था वाले लोग कभी हार्दिक शुद्धता से मुसलमानों से सच्ची सुलह कर लेंगे सर्वथा ग़लत है। अपितु उन का इन आस्थाओं के साथ मुसलमानों से सच्ची सुलह कर लेंगे सर्वथा ग़लत है। अपितु उन का इन आस्थाओं के साथ मुलमानों से सच्ची सुलह करना हज़ारों असंभव बातों से अधिक असंभव है। क्या कोई सच्चा मुसलमान सहन कर सकता है जो अपने पवित्र और बुज़ुर्ग नबियों के बारे में इन गालियों को सुने और फिर सुलह कर ले! कदापि नहीं।

अतः इन लोगों के साथ सुलह करना ऐसा ही हानिकारक है जैसा कि काटने वाले विषैले सांप को अपनी आस्तीन में रख लेना। यह क़ौम बहुत निर्दयी क़ौम है जो समस्त पैग़म्बरों को जो संसार में बड़े-बड़े सुधार कर गए मुफ़्तरी और झूठा समझते हैं न हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन की जीभ से बच सके न हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और न हमारे सय्यद-व-मौला जनाब ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन्होंने संसार में सब से अधिक सुधार किया, जिन के जीवित किए मुर्दे अब तक जीवित हैं।

ख़ुदा जो ग़ायब (अदृश्य) है उस के अस्तित्व का सबूत केवल एक गवाही से क्योंकर मिल सकता है? इसलिए ख़ुदा ने संसार में

प्रत्येक क़ौम में प्रत्येक देश में हज़ारों नबी पैदा किए और वे ऐसे समयों में आए कि जब पृथ्वी लोगों के पापों से अपवित्र हो चुकी थी उन्होंने बड़े निशानों के साथ ख़ुदा तआला के अस्तित्व का सबूत दिया और उसकी श्रेष्ठता हृदयों में बिठाई और पृथ्वी को नए सिरे से जीवित किया। परन्तु ये लोग कहते हैं कि वेद के अतिरिक्त कोई किताब ख़ुदा तआला की ओर से नहीं उतरी और समस्त नबी झूठे थे और उन का सम्पूर्ण काल छल और धोखे का काल था। हालांकि वेद अब तक आर्यवर्त को शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना), मूर्ति पूजा, तथा अग्नि-पूजा से साफ़ नहीं कर सका।

अत: ये लोग उन नबियों को झुठलाने में जिनकी सच्चाई सूर्य के समान चमकती है सीमा से बढ़ गए है। ख़ुदा जो अपने बन्दों के लिए स्वाभिमानी है इस का अवश्य फैसला करेगा। वह अवश्य अपने प्यारे नबियों के लिए कोई हाथ दिखाएगा। हम इन लोगों पर कोई अत्याचार नहीं करते, वे हम पर अत्याचार करते हैं। हम उनको दुआ देते हैं, वे हमें तीर मारते हैं। और महा तेजस्वी ख़ुदा की क़सम है कि यदि ये लोग तलवार के ज़ख़्म से हमें ज़ख्मी करते तो हमें ऐसा अप्रिय न लगता जैसा कि उनकी उन गालियों से जो हमारे चुने हुए नबियों को देते हैं। हमारे हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गए। हम ये गालियां सुन कर उन अपवित्र प्रकृति वाले दुनिया के कीड़ों के समान चापलूसी नहीं कर सकते जो कहते हैं कि हम इन समस्त लोगों को प्रेम की दृष्टि से देखते हैं। यदि इन के पिताओं को गालियां दी जातीं तो ऐसा कदापि न कहते। ख़ुदा इन का और हमारा फैसला करे। यह विचित्र धर्म है। क्या इस क़ौम से किसी भलाई की आशा हो सकती है? कदापि नहीं।

ये लोग इस्लाम अपितु समस्त नबियों के ख़तरनाक शत्रु हैं। इन की गालियों से भरपूर पुस्तकें हमारे पास मौजूद हैं।

अब हम अपने मूल उद्देश्य की ओर लौट कर कहते हैं कि क़ादियान के आर्य अखबारों में जो लाला शरमपत बिरादर लाला विशम्बरदास के हवाले से लिखा गया है कि हमने कोई आसमानी निशान इस लेखक का नहीं देखा यह इस प्रकार का झूठ है कि यदि कोई इन्सान गन्दी से गन्दी गन्दगी खा ले तो ऐसी गन्दगी खाना भी उस झूठ से बहुत कम है। इन बातों को सुनकर विश्वास होता है कि इतना झूठ बोलने वाले को अपने परमेश्वर पर ईमान नहीं और वह कदापि नहीं डरता कि झूठ का कोई दुष्परिणाम हो सकता है। चूंकि मैंने कई पुस्तकों में लाला शरमपत और लाला मलावामल निवासी क़ादियान के बारे में लिख दिया है कि इन्होंने अमुक-अमुक मेरे आसमानी निशान देखे हैं अपितु बीसियों निशान देखे हैं और वे पुस्तकें आज तक करोड़ों लोगों में प्रकाशित हो चुकी हैं। तो यदि इन्होंने मुझ से आसमानी निशान नहीं देखे तो इस स्थिति में दुनिया में मुझ से अधिक झूठा कौन होगा और मुझ जैसा कौन अपवित्र प्रकृति और झूठ गढ़ने वाला होगा जिसने केवल इफ़्तिरा और झूठ के तौर पर इन को अपने निशानों का साक्षी ठहरा दिया। और यदि मैं अपने दावे में सच्चा हूं तो प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि इस से अधिक मेरा और क्या अपमान होगा कि इन लोगों ने अखबारों तथा विज्ञापनों के द्वारा मुझे झूठा और इफ़्तिरा करने वाला ठहरा दिया। दूर के लोग क्या जानते हैं कि वास्तविकता क्या है अपितु इस शत्रुता के कारण कि अधिकतर लोगों को मेरे साथ हैं इन लोगों को सच्चा समझेंगे

और घर की गवाही समझेंगे। इस प्रकार से और भी अपनी आख़िरत ख़राब करेंगे। चूंकि मैं इस अपमान को सहन नहीं कर सकता तथा इस से ख़ुदा के स्थापित किए हुए सिलसिले पर अत्यन्त बुरा प्रभाव है इसिलए प्रथम तो लाला शरमपत और मलावामल को सम्बोधित करता हूं कि वे ख़ुदा की क़सम के साथ मुझ से फ़ैसला कर लें चाहे मुक़ाबले पर और चाहे लिख कर। इस प्रकार से ख़ुदा की क़सम खाएं कि अमुक-अमुक निशान जो नीचे लिखे गए हैं हमने नहीं देखे और यदि हम झूठ बोलते हैं तो ख़ुदा हम पर और हमारी सन्तान पर इस झूठ का दण्ड उतारे। और वे आसमानी निशान बुहत से हैं जो बराहीन अहमदिया में लिखे गए हैं। परन्तु इस क़सम के लिए सब निशानों के लिखने की आवश्यकता नहीं।

(1) लाला शरमपत के लिए यह पर्याप्त है कि प्रथम तो उसने मेरा वह युग देखा जबकि वह मेरे साथ अकेला कई बार अमृतसर गया और बराहीन अहमदिया के छपने के समय वह मेरे साथ ही पादरी रजब अली के मकान पर कई बार गया। वह अच्छी तरह जानता है कि उस समय मैं एक गुमनाम आदमी था। मेरे साथ किसी का संबंध न था और उसे खूब मालूम है कि बराहीन अहमदिया के छपने के युग में अर्थात् जब कि यह भविष्यवाणी एक संसार के रुजू करने के बारे में बराहीन अहमदिया में दर्ज हो चुकी थी। मैं केवल अकेला था। तो अब क़सम खाए कि क्या यह भविष्यवाणी उसने पूरी होती देख ली या नहीं? और क़सम खा कर कहे कि क्या उसके नज़दीक यह काम मनुष्य से हो सकता है कि अपनी दरिद्रता और <u>गुमनामी के युग में दुनिया के सामने अटल और निश्चित तौर</u>

पर यह भविष्यवाणी प्रस्तुत करे कि ख़ुदा ने मुझे फ़रमाया है कि तुझ पर एक ऐसा समय आने वाला है कि तू गुमनाम नहीं रहेगा, लाखों इन्सान तेरी ओर रुजू करेंगे और कई लाख रुपया तुझे आएगा और लगभग समस्त संसार में सम्मान के साथ तू प्रसिद्ध किया जाएगा। और फिर इस भविष्यवाणी को ख़ुदा पूरा कर दे। हालांकि वह जानता है कि उसने मुझ पर इफ़्तिरा किया है और झूठ बोला है और झूठ की गन्दगी खाई है। और ख़ुदा अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार प्रत्येक रुकावट डालने वाले को असफल रखे। और लाला शरमपत क़सम खाकर कहे कि क्या उसने यह भविष्यवाणी पूरी होती देख ली या नहीं? और क्या उसके पास ऐसा उदाहरण है कि किसी झूठे ने ख़ुदा का नाम लेकर ऐसी भुविष्यवाणी की हो और वह पूरी हो गई हो। चाहिए कि उसका उदाहरण प्रस्तुत करे।

(2) दूसरी क़सम खाकर यह बता दे कि क्या यह सच नहीं कि उसका कोई भाई विशम्बरदास, खुशहाल ब्राह्मण के साथ किसी फौजदारी मुक़द्दमः में दण्ड पाकर दोनों क़ैद हो गए थे। तो उस समय उसने मुझ से दुआ का निवेदन किया था और मैंने ख़ुदा तआला से ज्ञान पाकर उसे यह बताया था कि मेरी दुआ से आधी क़ैद विशम्बरदास की कम की गई। और उसे मैंने कश्फ़ी अवस्था में देखा है कि मैं उस दफ्तर में पहुंचा हूं जहां उसके दण्ड का रजिस्टर है और मैंने अपनी क़लम से आधा दण्ड काट दिया है परन्तु खुशहाल ब्राह्मण का दण्ड नहीं काटा अपितु दण्ड पूरा रखा क्योंकि उसने मुझ से दुआ का निवेदन नहीं किया था और क्या यह सच नहीं कि मैंने इस भविष्यवाणी के बताने के समय यह भी कहा

था कि ख़ुदा ने मुझे अपनी वह्यी से ज्ञान दिया है कि चीफ़ कोर्ट से मिस्ल वापस आएगी और विशम्बरदास। की आधी क़ैद कम की जाएगी परन्तु बरी नहीं होगा और ख़ुशहाल ब्राह्मण पूरी क़ैद भुगत कर जेल से बाहर आएगा और यह उस समय कहा था कि चीफ़ कोर्ट में विशम्बरदास और ख़ुशहाल ब्राह्मण की अपील अभी दायर ही की गई थी और किसी को ख़बर नहीं थी कि अंजाम क्या होगा अपितु स्वयं चीफ़ कोर्ट के जजों को भी ख़बर नहीं होगी कि किस आदेश की ओर हमारा क़लम चलेगा। उस समय मैंने बताया था कि वह शक्तिमान ख़ुदा जिसने क़ुर्आन उतारा है वह मुझे कहता है कि मैंने तेरी दुआ स्वीकार की और ऐसा होगा कि चीफ कोर्ट से मिस्ल वापस आएगी और विशम्बरदास की आधी क़ैद दुआ के कारण माफ़ की जाएगी परन्तु बरी नहीं होगा। और ख़ुशहाल ब्राह्मण न बरी होगा और न उसकी क़ैद कम की गई ताकि दुआ स्वीकार होने के लिए एक निशान रहे। और अन्त में ऐसा ही हुआ और मिस्ल कुछ सप्ताहों के बाद ज़िला में वापस आई और विशम्बरदास की आधी क़ैद कम की गई। परन्तु ख़ुशहाल ब्राह्मण का क़ैद में से एक दिन भी कम न किया गया और दोनों बरी होने से वंचित रहे। शरमपत क़सम खाकर यह भी बता दे कि क्या यह सच नहीं कि जब इस प्रकार से अन्त में मेरी भविष्यवाणी के अनुसार फैसला हुआ तो लाला शरमपत ने मेरी ओर एक पर्ची लिखी कि आप के सौभाग्य के कारण ख़ुदा ने ये ग़ैब की बातें आप पर खोल दीं और दुआ स्वीकार की।

लाला शरमपत क़सम खाकर यह भी बता दे कि क्या यह सच

नहीं कि एक अवधि तक वह मेरे पास यही झूठ बोलता रहा कि मेरा भाई विशम्बरदास बरी हो गया है और फिर जब हाफ़िज़ हिदायत अली जो उन दिनों में बटाला का तहसीलदार था संयोग से क़ादियान में आया और लगभग दस बजे का समय था तब विशम्बरदास मेरे मर्दाना मकान के नीचे उसे मिला और उसने विशम्बरदास को सम्बोधित करके कहा कि हम प्रसन्न हुए कि तुम क़ैद से मुक्ति पा गए परन्तु अफ़सोस कि तुम बरी न हुए। तब मैंने शरमपत को कहा कि तुम इतने समय तक मुझ से झूठ बोलते रहे कि मेरा भाई विशम्बरदास बरी हो गया है तो शरमपत ने यह उत्तर दिया कि हम ने असल सच्चाई को इसलिए छुपाया कि सच्चाई प्रकट करने से एक दाग़ रह जाता था और भविष्य में रिश्तों नातों में एक रुकावट पैदा हो जाती थी और भय था कि बिरादरी के लोग हमारे खानदान को दुष्कर्मी समझें। और क्या यह सच नहीं कि जब विशम्बरदास की क़ैद के बारे में चीफ़ कोर्ट में अपील दायर की थी तो इशा की नमाज़ के समय जब मैं अपनी बड़ी मस्जिद में था अली मुहम्मद नामक एक मुल्ला निवासी क़ादियान ने जो अब तक जीवित और हमारी जमाअत का विरोधी है मेरे पास आकर वर्णन किया कि अपील स्वीकार हो गई और विशम्बरदास बरी हो गया और कहा कि बाज़ार में इस खुशी का एक जोश फैला हुआ है। तब इस ग़म से मुझ पर वह हालत गुज़री जिसे ख़ुदा जानता है। इस ग़म से मैं महसूस नहीं कर सकता था कि मैं जीवित हूं या मर गया। तब इसी हालत में नमाज़ आरंभ की गयी जब मैं सज्दे में गया तब मुझे यह इल्हाम हुआ لَا تَحْزَنْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى अर्थात् ग़म न कर तुझ

को ही विजय होगी। तब मैंने शरमपत को इस बात की सूचना दी और वास्तविकता यह खुली कि अपील केवल ली गयी है यह नहीं कि विशम्बरदास बरी किया गया है।

अत: शरमपत क़सम खाकर बता दे कि क्या यह घटना नहीं हुई? और दूसरी ओर महुम्मद अली मुल्ला भी क़सम के लिए बुलाया जाएगा जो एक विरोधी अपितु एक पापी विरोधी का भाई है।

(3) और क्या यह सच नहीं है कि एक बार एक चन्दा सिंह नामक सिक्ख पर वृक्षों के बारे में बटाला तहसील में हमारी ओर से नालिश दर्ज की गई थी कि उसने हमारी इजाज़त के बिना अपने खेत से वृक्ष काट लिए हैं। तब ख़ुदा ने मेरी दुआ करने के समय मेरी दुआ को स्वीकार करके मुझ पर यह प्रकट किया था कि डिग्री हो गई। और मैंने यह भविष्यवाणी शरमपत को बता दी थी फिर ऐसा संयोग हुआ कि आदेश के समय हमारी ओर से अदालत में कोई उपस्थित न था और दूसरा पक्ष उपस्थित हो गया था। लगभग अस्र का समय था कि शरमपत ने हमारी मस्जिद में आकर उपहास के तौर पर मुझ से यह कहा कि मुक़द्दम: खारिज हो गया डिग्री नहीं हुई। तब मुझ पर वह ग़म गुज़रा जिसे मैं वर्णन नहीं कर सकता। क्योंकि ख़ुदा का अटल तौर पर कलाम था। मैं मस्जिद में अत्यन्त परेशानी से बैठ गया इस विचार से कि एक मुश्रिक ने मुझे शर्मिन्दा किया और मैं उसकी इस ख़बर से इन्कार नहीं कर सकता था क्योंकि लगभग पन्द्रह आदमी हिन्दू और मुसलमान बटाला से यह ख़बर लाए थे। इसलिए मुझ पर अत्यधिक ग़म छाया हुआ था। इतने में ग़ैब से एक आवाज़ आई और वह नितान्त रोबदार आवाज़ थी। उसके शब्द ये थे- डिग्री हो गई है,

मुसलमान है? अर्थात् क्या तू ख़ुदा के कलाम पर विश्वास नहीं करता। ऐसी आवाज़ इस से पूर्व मैंने कभी नहीं सुनी थी। मैं मस्जिद की ओर दौड़ा कि यह बुलन्द आवाज़ किसकी ओर से आई और अन्त में ज्ञात हुआ कि फ़रिश्ते की आवाज़ है। ये वही फ़रिश्ते हैं जिन से आजकल के अंधे★ आर्य इन्कार करते हैं। तब मैंने उसी समय शरमपत को बुलाया और कहा कि अभी ख़ुदा की ओर से मुझे यह आवाज़ आई है। इस पर वह फिर हंस दिया और कहा कि बटाला से पन्द्रह सोलह आदमी आए हैं जिनमें कुछ हिन्दू, कुछ सिक्ख, कुछ मुसलमान हैं और अभी उन में से कुछ बाज़ार में मौजूद हैं। यह कैसे हो सकता है कि वे सब झूठ बोलें। यह कह कर चला गया और मुझे उसने उस समय एक दीवाना सा समझा। रात मेरी बहुत बेचैनी में गुज़री। सुबह होते ही मैं बटाला गया। तहसील में हाफ़िज़ हिदायत अली तहसीलदार मौजूद न था परन्तु उसका कर्मचारी मथुरा दास नामक मौजूद था जो अब तक जीवित होगा। मैंने उस से पूछा कि क्या हमारा मुक़द्दमा ख़ारिज हो गया? उसने उत्तर दिया कि नहीं बल्कि डिग्री हुई। मैंने

★**हाशिया :-** ना समझ आर्य कहते हैं कि ख़ुदा को किसी पत्रवाहक की क्या आवश्यकता है। अर्थात् वह फ़रिश्तों का मुहताज नहीं। अतः यह तो सच है कि ख़ुदा किसी चीज़ का मुहताज नहीं परन्तु उसकी आदत में शामिल है कि वह माध्यमों से काम लेता है और माध्यमों से काम लेना उसके प्रकृति के सामान्य नियम में शामिल है। देखो वह हवा के माध्यम से कानों तक आवाज़ पहुंचाता है। तो शारीरिक सिलसिले से यह रूहानी कार्य यथा योग्य है जो रूहानी कानों को अपनी आवाज़ फ़रिश्तों के माध्यम से जो हवा के स्थान पर हैं पहुंचा दे और अवश्य है कि शारीरिक और रूहानी सिलसिले दोनों परस्पर अनुकूल हों और यही तर्क पवित्र क़ुर्आन ने प्रस्तुत की है। इसी से

कहा क़ादियान के पन्द्रह सोलह आदमी जो विरोधी पक्ष और उसके गवाह थे सब ने जाकर यही वर्णन किया है कि मुक़द्दमा ख़ारिज हो गया है उसने उत्तर दिया कि एक प्रकार से उन्होंने भी झूठ नहीं बोला। बात यह थी कि तहसीलदार के फैसला लिखने के समय मैं उपस्थित न था, किसी कार्य के लिए बाहर चला गया था या शायद यह कहा गया था कि मैं शौच करने गया था और तहसीलदार नया आया हुआ था और उसे पेच दर पेच मुक़द्दमों की ख़बर न थी और प्रतिपक्ष ने उसके फैसला लिखने के समय कमिश्नर साहिब का एक फैसला उसके सामने प्रस्तुत किया था। उसमें कमिश्नर साहिब का यह आदेश था कि यह काश्तकार मौरूसी है इसलिए इन का अधिकार है कि अपने-अपने खेत के वृक्ष आवश्यकता पड़ने पर काट लिया करें। मालिक का इसमें कुछ हस्तक्षेप नहीं। तहसीलदार ने इस फैसले को देख कर मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया और जब मैं आया तो मुझे वह अपना लिखा हुआ फैसला दिया कि मिस्ल के साथ लगा दो। मैंने पढ़कर कहा कि इन ज़मीदारों ने आप को धोखा दिया है क्योंकि जिस फैसले को उन्होंने प्रस्तुत किया है वह फायनेन्शल साहिब के आदेश से निरस्त हो चुका है और उस आदेश के अनुसार कोई काश्तकर मौरूसी हो या ग़ैर मोरूसी मालिक की अनुमति के बिना अपने खेत का वृक्ष नहीं काट सकता और मैंने मिस्ल में से वह फैसला उनको दिखा दिया। तब तहसीलदार ने तुरन्त अपना फैसला फाड़ दिया और टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया और दूसरा फैसला डिग्री का लिखा और कुल खर्च प्रतिवादी के ज़िम्मे डाला। प्रतिपक्ष वाले तो अपने पक्ष में फ़ैसला सुनकर खुशी-खुशी क़ादियान चल गए थे उनको इस

दूसरे फैसले की ख़बर न थी, इसिलए उन्होंने वही प्रकट किया जो उन को मालूम था।

तब मैंने वापस आकर यह सब हाल शरमपत को सुनाया और काश्तकारों को भी अपनी झूठी खुशी पर सूचना हो गई। तो यदि लाला शरमपत इस निशान से भी इन्कारी है तो चाहिए कि क़सम खा कर कहे कि ऐसी कोई घटना प्रकटन में नहीं आई और ऐसा बयान सर्वथा बनाया हुआ झूठ है और मैं विश्वास रखता हूं कि अभी बहुत से लोग क़दियान में उनमें से जीवित होंगे जिन्होंने यह निशान देखा है।

इसके अतिरिक्त अन्य ऐसे बीसियों आसमानी निशान हैं जिन का चश्मदीद गवाह लाला शरमपत है। वह तो बड़ी मुश्किल में पड़ गया है। आर्य लोग उस से कहां तक इन्कार कराएंगे।

(4) भला लाला शरमपत क़सम खाकर कहे कि क्या यह सच नहीं है कि जब नवाब मुहम्मद हयात खान सी.एस.आई. निलंबित हो गया था और बरी होने की कोई आशा नहीं थी और उसने मुझ से दुआ का निवेदन किया था तो मुझ पर ख़ुदा ने प्रकट किया था कि वह बरी किया जाएगा और मैंने कश्फ़ी नज़र से उसे अदालत की कुर्सी पर बैठे देखा था और यह बात मैंने उसे बता दी थी और न केवल उसको अपितु बहुत से लोगों को बताई थी। अत: किशन सिंह आर्य भी इसका गवाह है। यदि यह सच नहीं है तो क़सम खाए।

फिर लाला शरमपत कसम खाकर बता दे कि यह सच नहीं कि जब पंडित दयानन्द ने पंजाब में आकर बहुत शोर किया और ख़ुदा के चुने हुए नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन का अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में

तिरस्कार किया और ख़ुदा के समस्त मुक़द्दस नबियों को खोटे सोने के समान ठहराया। तब मैंने शरमपत को कहा कि ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट कर दिया है कि अब उसकी मौत का दिन क़रीब है वह बहुत जल्द मरेगा क्योंकि उसका दिल मर गया है। अतः वह इस भविष्यवाणी के बाद कुछ दिनों में ही अजमेर में मर गया। और अपनी हसरतें अपने साथ ले गया।

(6) शरमपत क़सम खा कर बता दे कि क्या यह सच नहीं है कि एक बार उसको और मलावामल को सुबह के समय यह इल्हाम बताया गया था कि आज अर्बाब सर्वर खान नामक व्यक्ति का रुपया आएगा और वह अर्बाब मुहम्मद लश्कर ख़ान का रिश्तेदार होगा। तब मलावामल समय पर डाकखाने में गया और ख़बर लाया कि सर्वर ख़ान का इतना रुपया आया परन्तु साथ ही यह बहाना किया कि यह कैसे मालूम हो कि यह अमुक व्यक्ति का रिश्तेदार है। तब इसके फैसले के लिए सामने मर्दान में बाबू इलाही बख़्श एकाउन्टेण्ट की ओर पत्र लिखा गया था जो इन दिनों कट्टर विरोधी हैं। उनका उत्तर आया कि अर्बाब सर्वर ख़ान अर्बाब मुहम्मद लश्कर ख़ान का बेटा है।

(7) और क्या यह सच नहीं कि एक बार मुझे यह इल्हाम हुआ था "ए अमी बाज़िए ख़्वेश कर दी व मिरा अफ़सोस बिसियार दारी।" और उसी दिन शरमपत के घर में एक लड़का पैदा हुआ था जिस का नाम उसने अमीन चन्द रखा। उन दिनों मेरा भाई ग़ुलाम क़ादिर बीमार था। मैंने लाला शरमपत को कहा कि आज मुझे यह इल्हाम हुआ है। यह मेरे भाई की मृत्यु की ओर संकेत हैं। और इल्हामी तौर पर मेरे बेटे सुल्तान अहमद की ओर से यह बात है

और या संभव है तेरे बेटे कि ओर से संकेत हो जिसका नाम तूने अमीन चन्द रखा है।★ मेरा यह कहना ही था कि लाला शरमपत ने घर जाकर अपने बेटे का नाम बदल दिया और अमीन चन्द की बजाए गोकुलचन्द रख दिया जो अब तक जीवित मौजूद है परन्तु कुछ दिन बाद मेरा भाई मृत्यु पा गया। यह बात भी लाला शरमपत से क़सम लेकर पूछनी चाहिए कि क्या यह सच नहीं है कि जब गुरदासपुर में एक व्यक्ति करमदीन नामक ने मुझ पर आत्माराम एक्स्ट्रा असिसटेण्ट की अदालत में मानहानि का दावा दायर किया था तो मैंने लाला शरमपत को कहा था कि ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि अन्ततः मैं इस मुक़द्दमे में बरी किया जाऊंगा परन्तु करमदीन दण्ड पाएगा। यह उस समय की ख़बर है कि जब समस्त लक्षण इसके विपरीत थे और हाकिम की राय हमारे विरुद्ध थी। अतः मुक़द्दमः के प्रस्तावक आत्माराम ने अपने फैसले के समय बड़ी कठोरता पूर्वक फैसला दिया और हम पर सात सौ रुपया जुर्माना

★**हाशिया :-** यद्यपि मुझे विश्वास था कि यह इल्हाम मेरे भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर की मृत्यु के बारे में है और यही मैंने अपने कुछ रिश्तेदारों को बता भी दिया था और स्वयं अपने भाई को भी बताया था जिस से वह बहुत दुखी हुए और बाद में मैंने अफसोस किया कि उनको मैंने क्यों बताया। परन्तु जब शरमपत ने मुझे ख़बर दी कि मैंने अपने बेटे का नाम अमीन चन्द रखा है तो ख़ुदा की तक्दीर से मेरे मुंह से ये शब्द निकल गए कि संभव है कि अभिप्राय अमी से अमीन चन्द हो, क्योंकि हिन्दू लोग अमीनचन्द के नाम को संक्षिप्त करके अमी भी कह देते हैं। तब उसके दिल में बहुत भय पैदा हुआ और उसने घर में जाकर अमीनचन्द के स्थान पर अपने लड़के का नाम गोकुल चन्द रख दिया। इसी से

किया और नाख़ूनों तक ज़ोर लगाकर फैसला लिखा और फिर डिवीज़नल जज साहिब की अदालत से जैसा कि मैंने भविष्यवाणी की थी आत्माराम का वह आदेश निरस्त किया गया और जज साहिब ने मुझे बड़े सम्मान के साथ बरी करके अपने फैसले में लिखा कि जो शब्द अपीलांट ने अर्थात् मैंने करमदीन के बारे में प्रयोग किए हैं अर्थात् कज़्ज़ाब और लईम★ का शब्द इन शब्दों से करमदीन की कुछ भी मानहानि नहीं हुई अपितु यदि इन शब्दों से बढ़कर भी कोई और कठोर शब्द उसके लिए प्रयोग किए जाते तब भी वह उन शब्दों का पात्र था। यह तो मेरे पक्ष में फैसला हुआ, परन्तु करमदीन पर पचास रुपए जुर्माना क़ायम रहा। यह भविष्यवाणी न केवल मैंने लाला शरमपत को बताई थी अपितु मैं इस भविष्यवाणी को मुकद्दमः के होने से पहले अपनी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' में जो अरबी भाषा में एक पुस्तक है प्रकाशित कर चुका था। तो किसी के लिए संभव नहीं कि इस से इन्कार कर सके।⁂

★**हाशिया :-** करम दीन का बयान था कि कज़्ज़ाब उसको कहते हैं जो बहुत झूठ बोलने वाला है। और हमेशा झूठ बोलता हो और लईम उस को कहते हैं जो ज़ना से पैदा हुआ हो और उसके खानदान में ऐसा ही सिलसिला चला आया हो और इस पर उसने पुस्तकें भी दिखाईं परन्तु डिबीज़नल जज ने फ़रमाया कि यदि इन शब्दों से कठोरतम शब्द भी बोले जाते तब भी इस से करमदीन का कुछ अपमान नहीं था। अर्थात् उस की हालत की दृष्टि से अभी ये शब्द कम हैं। इसी से

⁂**हाशिया :-** यह भविष्यवाणी न केवल 'मवाहिबुर्रहमान' पुस्तक में अपितु अखबार अलहकम और अलबद्र में भी घटित होने से पूर्व प्रकाशित की गई थी। इसी से।

ये कुछ भविष्यवाणियां नमूने के तौर पर मैं इस समय प्रस्तुत करता हूं और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि यह सब वर्णन सही है और कई बार लाला शरमपत सुन चुका है और यदि मैंने झूठ बोला है तो ख़ुदा मुझ पर और मेरे लड़कों पर एक वर्ष के अन्दर दण्ड उतारे। आमीन ولعنة الله على الكاذبين ऐसा ही शरमपत को भी चाहिए कि मेरी इस क़सम के मुकाबले पर क़सम खाए और यह कहे कि यदि मैंने इस क़सम में झूठ बोला है तो ख़ुदा मुझ पर और मेरी सन्तान पर एक वर्ष के अन्दर उसका दण्ड डाले। आमीन ولعنة الله على الكاذبين ★

यह तो शरमपत के बारे में लिखा गया और मलावामल इसका मित्र भी इस में भागीदार है। उसको चाहिए कि इस बात की क़सम खाए कि क्या मेरे पिता जी की मृत्यु के पश्चात् इल्हाम اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ को मुहर पर खुदवाने के लिए उसे मैंने अमृतसर नहीं भेजा था? और क्या पांच रुपए मज़दूरी देकर वह मुहर नहीं लाया था, और क्या उस युग में इस उत्थान, प्रतिष्ठा और वैभव और लोगों के रुजू का नामो निशान न था? और क्या ये समस्त भविष्यवाणियां उसे नहीं बताई गईं थी जिसके लिए वह भेजा गया था। अर्थात् उसे यह बताया गया था कि ख़ुदा तआला की ओर से मुझे यह ख़बर मिली थी कि शनिवार के दिन सूर्य अस्त होने के पश्चात् मेरा

★**हाशिया :-** यह बद्-दुआ का वाक्य इस बात से अनिवार्य और सम्बद्ध है कि मेरी इस दुआ के मुकाबले पर शरमपत भी अपने बारे में इन्हीं शब्दों के साथ बद्-दुआ किसी अख़बार में प्रकाशित करा दे। इसी से।

पिता मृत्यु पा जाएगा और तुझे कुछ ग़म नहीं करना चाहिए क्योंकि मैं तेरा पालन-पोषण करने वाला रहूंगा और तेरी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए मैं पर्याप्त हूंगा और यह लगभग पैंतीस या छत्तीस वर्ष का इल्हाम है जबकि मैं गुमनामी के कोने में ऐसा छुपा हुआ था जैसा कि किसी जौहर का एक टुकड़ा समुद्र की तह के नीचे छुपा हो।

दूसरे यह बता दे कि क्या वह एक बार क्षय रोग में ग्रस्त नहीं हुआ? और उसे स्वप्न भी आ चुका था कि एक ज़हरीले सांप ने उसे काटा है और समस्त शरीर सूज गया है। और क्या यह सच नहीं है कि वह मेरे पास आकर रोया था तब मैंने उसके लिए दुआ की थी और ख़ुदा तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ था - قُلْنَا يَا نَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا سَلَامًا अर्थात् हे ज्वर की अग्नि ठण्डी हो जा। और यह इल्हाम उसे सुनाया गया था। तत्पश्चात् कुछ दिनों में ही वह स्वस्थ हो गया।

मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि ये बातें सच हैं और यदि ये झूठ हैं तो ख़ुदा एक वर्ष के अन्दर मुझ पर और मेरे लड़कों पर तबाही उतारे और झूठ का दण्ड दे। आमीन ولعنةُ الله عَلَى الْكاذبين

ऐसा ही मलावामल को चाहिए कि कुछ दिन की दुनिया से प्रेम न करे। और यदि इन बयानों से इन्कारी है तो मेरी तरह क़सम खाए कि यह सब इफ़्तिरा है और यदि ये बातें सच हैं तो एक वर्ष के अन्दर मुझ पर और मेरी समस्त सन्तान पर ख़ुदा का अज़ाब आए। और झूठों पर ख़ुदा की लानत।★

★हाशिया :- यह सच है कि एक बार मलावामल ने अपने विज्ञापन में मेरे निशानों के देखने से इन्कार कर दिया था, परन्तु उस इन्कार का कुछ विश्वास

और स्मरण रहे कि ये लोग इस प्रकार से क़सम न खाएंगे अपितु सच को छुपाने का तरीक़ा ग्रहण करेंगे और सच्चाई का ख़ून करना चाहेंगे। तब भी मैं आशा रखता हूं कि सच्चाई को छुपाने की हालत में भी ख़ुदा उन को दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ेगा।★ क्योंकि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी का अपमान ख़ुदा का अपमान है।

मलावामल इस बात का भी दोषी है कि उसने यह सब कुछ देख कर विरोध करके अपने पूरे ज़ोर और पूर्ण विरोध से एक विज्ञापन दिया था जिसको दस वर्ष गुज़र गए तथा लोगों को रोका था कि मेरी ओर रुजू न करें और न कुछ आर्थिक सहायता करें। तब उसके रोकने का परिणाम यह हुआ कि उसके विज्ञापन के बाद कई लाख लोग मेरे साथ सम्मिलित हुए और कई लाख रुपया आया। परन्तु फिर भी उसने ख़ुदा के हाथ को महसूस न किया।

अन्त में हम इस बात का उल्लेख करना बहुत ही आवश्यक समझते हैं कि जिस परमेश्वर को पंडित दयानन्द ने आर्यों के सामने प्रस्तुत किया है वह एक ऐसा परमेश्वर है जिस का न होना और

शेष हाशिया - नहीं। प्राय: लोग स्वार्थ से दो-दो आने लेकर अदालतों में गवाही के समय झूठ की गन्दगी खा लेते हैं। सम्पूर्ण दारोमदार उसी क़सम पर है जो मैंने लिखी है। यदि ये लोग ख़ुदा से निर्भीक होकर अपनी क़ौम को प्रसन्न करने के लिए ऐसी क़सम खा लेंगे तब उनको मालूम होगा कि ख़ुदा भी है। इसी से।

★हाशिया :- यदि वे सच-सच प्रकाशित कर देंगे तो मुझे दृढ़ आशा है कि वे ख़ुदा से प्रतिफल और बरकत पाएंगे परन्तु ख़ुदा पसन्द नहीं करता कि कोई झूठ बोलकर सच्चाई पर पर्दा डालना चाहे कि उसमें वह ख़ुदा के सम्मान और प्रताप पर आक्रमण करता है। इसिलए अन्तत: ख़ुदा उसे पकड़ लेता है। इसी से।

होना समान है। क्योंकि वह इस बात पर सामर्थ्यवान नहीं कि यदि व्यक्ति अपने बेकार घूमने और दुष्कर्मों के युग से तौबः करके उसी अपने पहले जन्म में मुक्ति को पाना चाहे तो उसे उसकी तौबः और पवित्र परिवर्तन के कारण मुक्ति प्रदान कर सके अपितु उसके लिए आर्य सिद्धान्त के अनुसार किसी दूसरी योनि में पड़कर दोबारा संसार में आना आवश्यक है। चाहे वह मानव योनि को छोड़कर कुत्ता बने या बन्दर या सूअर। परन्तु बनना तो अवश्य चाहिए। यह परमेश्वर जिसे दयालु और सर्वशक्तिमान कहा जाता है यदि मनुष्य ने अपने ही प्रयास से सब कुछ करना है तो मैं नहीं समझ सकता कि फिर परमेश्वर का किस बात में आभार व्यक्त किया जाए, और जबकि हम देखते हैं कि मनुष्य की आयु के कुछ भाग में ऐसा समय भी आ जाता है कि वह किसी सीमा तक काम-भावना संबंधी आवेगों तथा इच्छाओं के अधीन होता है और कम से कम यह कि लापरवाही जो पापों की मां है उससे अवश्य कुछ भाग लेता है और यह मानव प्रकृति में सम्मिलित है कि वह क्या शारीरिक पहलू की दृष्टि से और क्या रूहानी पहलू की दृष्टि से प्रारंभ में कमज़ोरी में पैदा होता है। फिर यदि ख़ुदा की कृपा साथ हो तो धीरे-धीरे पवित्रता की ओर प्रगति करता है। तो यह ख़ूब परमेश्वर है जिसको मानवीय प्रकृति की भी ख़बर नहीं। यदि इसी प्रकार मुक्ति पाता है तो फिर मुक्ति की वास्तविकता मालूम। हम इस परीक्षा के लिए न केवल एक आर्य को सम्बोधित करते हैं, न दो को, न तीन को अपितु अत्यन्त विश्वास और पूर्ण प्रतिभा के साथ कहते हैं कि हमारे सामने दो हज़ार या दस हज़ार या बीस हज़ार या उदाहरणतया एक लाख ही आर्य

खड़े होकर क़सम खाएं कि क्या उन की जीवनी ऐसी पवित्र है कि उन से किसी प्रकार का पाप नहीं हुआ और क्या वे आर्य सिद्धान्तों की दृष्टि से तसल्ली रखते हैं कि वे मरते ही मुक्ति पा जाएंगे। और फिर सृष्टियों पर दृष्टि डाली जाती है तो ज्ञात होता है कि मनुष्यों की संख्या का दूसरी सृष्टियों से वह संबंध नहीं जो बूंद को समुद्र से होता है। क्योंकि उन समस्त असंख्य प्राणियों के अतिरिक्त जो ख़ुश्की और तरी में पाए जाते हैं ऐसे अदृश्य जीव भी वायु मंडल तथा जल में मौजूद हैं जो दिखाई नहीं दे सकते जैसा कि अन्वेषणों से सिद्ध है कि एक बूंद जल में कई हज़ार कीटाणु होते हैं। तो इस से सिद्ध होता है कि इतना समय और लम्बी अवधि गुज़रने के बावजूद परमेश्वर ने मुक्ति देने में ऐसी अयोग्य कार्रवाई की है कि जैसे कुछ भी नहीं किया। इस से यह परिणाम निकलता है कि परमेश्वर की कदापि इच्छा ही नहीं कि कोई व्यक्ति मुक्ति प्राप्त कर सके और या यों कहो कि वह मुक्ति देने पर समर्थ ही नहीं। और यह बात बहुत ज्ञानगम्य मालूम होती है क्योंकि यदि समर्थ हो तो फिर कोई कारण ज्ञात नहीं होता कि वह अनश्वर मुक्ति या मुक्ति न दे सके। और ऐसा ही दयालु और सामर्थ्यवान होने के बावजूद कुछ समझ नहीं आता कि वह क्यों ऐसा चिड़चिड़ा स्वभाव रखता है कि एक तनिक से पाप को भी क्षमा नहीं कर सकता और जब तक एक पाप के लिए करोड़ों योनियों में न डाले प्रसन्न नहीं होता। ऐसे परमेश्वर से किस अच्छाई की आशा हो सकती है? और जबकि एक शालीन प्रकृति का इन्सान अपने दोषियों के दोषों को उनके ध्यान देने और क्षमा-याचना करने पर क्षमा कर सकता है और मनुष्य की प्रकृति में

यह शक्ति पाई जाती है कि किसी ग़लती करने वाले की शर्मिन्दगी तथा रोने-गिड़गिड़ाने से उस की ग़लती को क्षमा कर देता है तो क्या वह ख़ुदा जिसने मनुष्य को पैदा किया है वह इस विशेषता से वंचित है? नऊज़ुबिल्लाह कदापि नहीं, कदापि नहीं।

अतः यह आर्यों की ग़लती है कि उस ख़ुदा को जिसको वे दयालु भी कहते हैं और सर्वशक्तिमान भी समझते हैं उसको इस महान विशेषता से वंचित ठहराते हैं। स्मरण रहे कि मनुष्य यों सर्वथा कमज़ोरी से भरा हुआ है ख़ुदा की क्षमा करने की विशेषता के बिना मुक्ति कदापि नहीं पा सकता। और यदि ख़ुदा में क्षमा करने की विशेषता नहीं तो फिर मनुष्य में कहां से पैदा हो गई? स्मरण रहे कि मुक्ति न पाना एक मृत्यु है। ऐसा ही सच्ची तौबः करना भी एक मृत्यु है तो मृत्यु का इलाज मृत्यु है। क्या वह ख़ुदा जो प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है उसने हमारी इस मृत्यु का इलाज कोई नहीं रखा और क्या हम बिना इलाज ही मरेंगे? कदापि नहीं। जब से दुनिया पैदा हुई है इलाज भी साथ ही पैदा हुआ है और अफ़सोस से कहा जाता है कि ईसाइयों और आर्यों ने इस आस्था से एक ही मार्ग पर क़दम मारा है। अन्तर केवल यह है कि ईसाई तो इन्सान के पाप क्षमा कराने के लिए एक नबी के ख़ून की आवश्यकता समझते हैं और यदि वह न मारा जाता तो पाप क्षमा न किए जाते। और यदि सिद्ध हो कि वह मारा नहीं गया जैसा कि हमने सिद्ध भी कर दिया है और यह बात पुख्ता सबूत को पहुंचा दी है कि हज़रत ईसा अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मृत्यु प्राप्त हुआ और एक संसार जानता है कि कश्मीर में उसकी क़ब्र है तो इस स्थिति में कफ़्फ़ारः का

समस्त ताना-बाना बेकार हो गया और आर्य लोग अपने परमेश्वर को पापों के क्षमा करने से सर्वथा असमर्थ समझते हैं। और आर्य तथा ईसाई इस आस्था में दोनों भागीदार हैं कि ख़ुदा दोषियों को उनकी शर्मिन्दगी और तौबः करने पर क्षमा नहीं कर सकता और आर्यों ने केवल इतने पर ही बस नहीं की अपितु वे तो अपने परमेश्वर को इस बात से भी उत्तर देते हैं कि वह मनुष्य का स्रष्टा और उनकी समस्त आध्यात्मिक (रूहानी) और शारीरिक शक्तियों के वरदान का स्रोत है और इस प्रकार से उन पर परमेश्वर की पहचान का दरवाज़ा भी बन्द है। क्योंकि वेद के अनुसार परमेश्वर की आदत नहीं है कि कोई आसमानी निशान दिखाए और इस प्रकार से उन पर परमेश्वर की पहचान का दरवाज़ा भी बन्द है। क्योंकि वेद के अनुसार परमेश्वर की आदत नहीं है कि कोई आसमानी निशान दिखाए और इस प्रकार से अपने अस्तित्व का पता दे और दूसरी ओर वह संसार की रूहों और कणों का स्रष्टा नहीं है। अत: दोनों ओर से आर्य धर्म के अनुसार परमेश्वर की पहचान असंभव है। इसके अतिरिक्त जिस शिक्षा पर गर्व किया जाता है नियोग का मामला उसकी वास्तविकता समझने के लिए उत्तम नमूना है। परन्तु क्या किसी सभ्य इन्सान की प्रकृति स्वीकार कर सकती है कि उसके जीवन में उसकी पत्नी जिसे तलाक़ भी नहीं दी गई दूसरे से सम्भोग कर ले।

इसके अतिरिक्त जिस अनश्वर मुक्ति का मनुष्य अभिलाषी है और उसकी प्रकृति में यह अंकित कर दिया गया है कि वह हमेशा के आनन्द और आराम का प्रत्याशी हो। इस अनश्वर मुक्ति से यह धर्म इन्कारी है और अपने परमेश्वर के लिए यह प्रसारित करते हैं

कि जैसे वह एक सीमित अवधि के बाद अपने बन्दों को मुक्ति-गृह से बाहर निकाल देता है और उसका यह कारण प्रस्तुत करते हैं कि चूंकि संसार का सिलसिला सदैव के लिए जारी है और परमेश्वर रूहों का स्रष्टा नहीं इसलिए परमेश्वर के लिए यह कठिनाई आई कि यदि वह समस्त रूहों को हमेशा की मुक्ति दे दे तो इस से संसार का सिलसिला टूट जाएगा और किसी दिन परमेश्वर निलंबित और खाली हाथ रह जाएगा। क्योंकि हर एक रूह जो हमेशा की मुक्ति पाकर संसार से गई तो जैसे वह परमेश्वर के हाथ से गई। तो इस प्रकार से जब रूहें खर्च होती रहीं तो इस कारण से कि परमेश्वर कोई रूह पैदा नहीं कर सकता और आमदन का रास्ता बिल्कुल बन्द तो अवश्य एक दिन ऐसा आ जाएगा जब परमेश्वर के हाथ में एक भी रूह नहीं रहेगी ताकि वह संसार में भेजी जाए। इसलिए इस विचार से परमेश्वर ने यह अग्रिम भूमिका अपना रखी है कि हमेशा की मुक्ति से रूहों को इन्कार कर दिया करता है और धक्के देकर मुक्ति-गृह से बाहर निकालता है।

यहां कुछ अनभिज्ञ आर्य केवल चालाकी से यह भी कहते हैं कि चूंकि मनुष्य के कर्म सीमित हैं इसलिए मुक्ति भी सीमित रखी गयी। परन्तु वे धोखा खाते हैं या धोखा देते हैं। क्योंकि मनुष्य की प्रकृति में हमेशा का आज्ञापालन केन्द्रित है। नेक आदमी कब कहते हैं कि इतनी अवधि के पश्चात् हम ख़ुदा तआला की बन्दगी और आज्ञापालन त्याग देंगे अपितु यदि सीमित अवधि तक उन को आयु दी जाए तब भी वह ख़ुदा तआला का आज्ञापालन और बन्दगी करते रहेंगे। इस स्थिति में यदि वे शीघ्र मर जाएं तो उन का क्या पाप है।

उनकी नीयतों में तो हमेशा का आज्ञापालन है, न किसी सीमा तक तथा समस्त निर्भरता नीयत पर है और मृत्यु जो मनुष्य पर आती है वह ख़ुदा का कार्य है न कि मनुष्य का।

ये हैं आस्थाएं आर्य लोगों की जिन पर वे गर्व करते हैं। चूंकि उनके विचार में यह बात जमी हुई है कि एक गुनाह (पाप) से भी असंख्य योनियों का दण्ड मौजूद है। इसलिए वे गुनाह से पवित्र होने के लिए कोई कोशिश करना व्यर्थ और बेफ़ायदा समझते हैं। और उनके धर्म में कोई इच्छा-दमन नहीं है जिसके अनुसार इसी संसार में मनुष्य गुनाह से पवित्र हो सके जब तक आवागमन के माध्यम से और भिन्न-भिन्न प्रकार की योनियों में पड़ने से दण्ड न पा ले। तो स्पष्ट है कि इस स्थिति में कोई किस आशा पर इच्छा-दमन कर सकते हैं। यदि वे सोचें और यदि उन को रूहानी फ़िलास्फ़ी का कोई भाग प्राप्त हो तो वे शीघ्र समझ सकते हैं कि वह इस आस्था के कारण दयालु, कृपालु ख़ुदा की दया का दरवाज़ा अपने ऊपर बन्द कर रहे हैं। वे तौबः (पश्चाताप) से मात्र कुछ शब्द अभिप्राय लेते हैं। परन्तु सच्ची तौबः वास्तव में एक मृत्यु है जो मनुष्य की अपवित्र भावनाओं पर आती है और एक सच्ची क़ुर्बानी है जो इन्सान अपनी पूर्ण सच्चाई से ख़ुदा तआला के दरबार में अदा करता है और समस्त क़ुर्बानियां जो रस्म के तौर पर होती हैं इसी का नमूना है। तो जो लोग यह सच्ची क़ुर्बानी अदा करते हैं जिसका नाम दूसरे शब्दों में तौबः है वास्तव में वे अपने घटिया जीवन पर एक मृत्यु लाते हैं। तब ख़ुदा तआला जो कृपालु और दयालु है उस मृत्यु के बदले में दूसरे लोक में उनको मुक्ति का जीवन प्रदान करता है,

क्योंकि उसकी कृपा और दया उस कृपणता से पवित्र है जो किसी मनुष्य पर दो मौतें लाए। अतः मनुष्य तौबः की मृत्यु से हमेशा के जीवन को खरीदता है और हम इस जीवन को प्राप्त करने के लिए किसी दूसरे को फांसी पर चढ़ाने के मुहताज नहीं। हमारे लिए वह सलीब पर्याप्त है जो अपनी क़ुर्बानी देने की सलीब है।

स्मरण रहे कि तौबः का शब्द अत्यन्त सूक्ष्म और अपने अन्दर रूहानी मायने रखता है जिसकी अन्य क़ौमों को ख़बर नहीं। अर्थात् तौबः उस रुजू को कहते हैं कि जब मनुष्य सम्पूर्ण मानवीय भावनाओं का मुक़ाबला करके और स्वयं पर एक मृत्यु ला कर ख़ुदा तआला की ओर चला आता है। तो यह कुछ आसान बात नहीं है तथा एक मनुष्य को उसी समय तौबः करने वाला कहा जाता है जब वह तामसिक वृत्ति के अनुकरण से पूर्णतया पृथक होकर और प्रत्येक कटुता तथा प्रत्येक मृत्यु लाकर ख़ुदा तआला की ओर चला आता है। तो यह कुछ आसान बात नहीं है तथा एक मनुष्य को उसी समय तौबः करने वाला कहा जाता है जब वह तामसिक वृत्ति के अनुकरण से पूर्णतया पृथक होकर और प्रत्येक कटुता तथा प्रत्येक मृत्यु ख़ुदा के मार्ग में अपने लिए पसन्द करके ख़ुदा तआला की चौखट पर गिर जाता है तब वह इस योग्य हो जाता है कि इस मृत्यु के बदले में ख़ुदा तआला उसको जीवन प्रदान करे। चूंकि आर्य लोग केवल बहुत सी योनियों को मुक्ति का आधार समझ बैठे हैं इसलिए उनका इस ओर ध्यान नहीं आता है। नहीं जानते कि जिस प्रकार मैला कपड़ा भट्टी पर चढ़ने से और फिर धोबी के हाथ से शुद्ध जल के किनारे पर भिन्न-भिन्न प्रकार के आघात् उठाने से अन्ततः

वह सफेद हो जाता है। इसी प्रकार यह तौबः जिस के मायने मैं वर्णन कर चुका हूं मनुष्य को पवित्र और शुद्ध कर देती है। मनुष्य जब ख़ुदा तआला की प्रेमाग्नि में पड़कर अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को जला देता है तो वही प्रेम की मृत्यु उसे एक नया जीवन प्रदान करती है। क्या तुम नहीं समझ सकते कि प्रेम भी एक अग्नि है और पाप भी एक अग्नि है। तो यह अग्नि जो ख़ुदा के प्रेम की अग्नि को समाप्त कर देती है। यही मुक्ति की जड़ है।

अत्यन्त अफ़सोस तो यह है कि आर्य लोग अपने धर्म की ख़राबियों को नहीं देखते और इस्लाम पर व्यर्थ ऐतराज़ करते हैं और मज़ेदार बात यह है कि उन का कोई भी ऐसा ऐतराज़ नहीं जो उनके धर्म के किसी समुदाय की कार्य-पद्धति में सम्मिलित नहीं। अब हम इस पुस्तक को ख़ुदा के नाम पर समाप्त करते हैं।

الحمد لِلّٰہ اولًا وَ اٰخرًا ھو مو لیٰنا نعم المولیٰ و نعم النصیر

नज़्म
लेखक की ओर से

इस्लाम से न भागो! राहे हुदा यही है,
ऐ सोने वालो जागो! शम्सुज़्ज़ुहा यही है।

मुझ को क़सम ख़ुदा की जिसने हमें बनाया,
अब आसमां के नीचे दीने ख़ुदा यही है।

वह दिलिस्तां निहां है किस राह से उसको देखें,
इन मुश्किलों का यारो मुश्किल कुशा यही है।

बातिन सियह हैं जिनके इस दीं से हैं वह मुन्किर,
पर ऐ अंधेरे वालो! दिल का दिया यही है।

दुनिया की सब दुनाकें हैं हम ने देखि भालीं,
आख़िर हुआ यह साबित दारुश्शिफ़ा यही है।

सब खुश्क हो गए हैं जितने थे बाग़ पहले,
हर तरफ़ मैंने देखा बुस्तां हरा यही है।

दुनिया में इस का सानी कोई नहीं है शर्बत,
पी लो तुम इस को यारो आबे बक़ा यही है।

इस्लाम की सच्चाई साबित है जैसे सूरज,
पर देखते नहीं हैं दुश्मन, बला यही है।

जब खुल गई सच्चाई फिर उसको मान लेना,
नेकों की है यह ख़स्लत राहे हया यही है।

जो हो मुफ़ीद लेना जो बद हो उससे बचना,
अक्लो खिरद यही है फ़हमो ज़का यही है।

मिलती है बादशाही इस दीं से आसमानी,
ऐ तालिबाने दौलत ज़िल्ले हुमा यही है।

सब दीं हैं इक फ़साना शिर्कों का आशियाना,
उसका जो है यगानः चेहरा नुमा यही है।

सौ-सौ निशां दिखाकर लाता है वह बुलाकर,
मुझ को जो उसने भेजा बस मुद्दआ यही है।

करता है मौजिज़ों से वह यार दीं को ताज़ा,
इस्लाम के चमन की बादे सबा यही है।

ये सब निशां हैं जिन से दीं अब तलक है ताज़ा,
ऐ गिरने वाले दौड़ो दीं का असा यही है।

किस काम का वह दीं है जिसमें निशां नहीं है,
दीं की मेरे प्यारो ज़र्री क़बा यही है।

अफ़सोस आर्यों पर जो हो गए हैं शप्पर,
वह देखकर हैं मुन्किर ज़ुल्मो जफ़ा यही है।

मालूम करके सब कुछ महरूम हो गए हैं,
क्या इन नियोगियों का ज़िहने रसा यही है।

इक हैं जो पाक बन्दे इक हैं दिलों के गन्दे,
जीतेंगे सादिक़ आखिर हक़ का मज़ा यही है।

इन आर्यों का पेशा हर दम है बद ज़ुबानी,
वेदों में आर्यों ने शायद पढ़ा यही है।

पाकों को पाक फ़ितरत देते नहीं हैं गाली,
पर इन सियह दिलों का शेवः सदा यही है।

अफ़सोस सब्ब-व-तौहीं सब का हुआ है पेशा,
किस को कहूं कि उनमें हर्ज़ा दिरा यही है।

आख़िर ये आदमी थे फिर क्यों हुए दरिन्दे,
क्या जून इन की बिगड़ी या ख़ुद क़ज़ा यही है।

जिस आर्य को देखें तहज़ीब से है आरी,
किस-किस का नाम लेवें हर सू वबा यही है।

लेखु की बदज़ुबानी कारिद हुई थी उस पर,
पंडित लेखराम
फिर भी नहीं समझते हुमुक़ो ख़ता यही है।

अपने किए का समरा **लेखू** ने कैसा पाया,
आख़िर ख़ुदा के घर में बद की सज़ा यही है।

नबियों की हतक करना और गालियां भी देना,
कुत्तों सा खोलना मुंह तुख़्मे फ़ना यही है।

मीठे भी हो के आख़िर नश्तर ही हैं चलाते,
इन तीर: बातिनों के दिल में दग़ा यही है।

जां भी अगर्चे देवें इन को बतौर एहसां,
आदत है इन की कुफ़्रां रंजो इना यही है।

हिन्दू कुछ ऐसे बिगड़े दिल पुर हैं बुग़्ज़ो कीं से,
हर बात में है तौहीं तर्ज़े अदा यही है।

जां भी है इन पे कुर्बां गर दिल से होवें साफ़ी,
पर ऐसे बद् किनों का मुझ को गिला यही है।

अहवाल क्या कहूं मैं इस ग़म से अपने दिल का,
गोया कि इन ग़मों का मेहमां सरा यही है।

लेते ही जनम अपना दुश्मन हुआ यह फ़िर्क़ा,
आख़िर की क्या उम्मीदें जब इब्तिदा यही है।

दिल फट गया हमारा तहक़ीर सुनते-सुनते,
ग़म तो बहुत हैं दिल में पर जां गुज़ा यही है।

दुनिया में गर चः होगी सौ क़िस्म की बुराई,
पाकों की हतक करना सब से बुरा यही है।

ग़फ़्लत पे ग़ाफ़िलों की रोते रहे हैं मुर्सल,
पर इस ज़मां में लोगो नौहा नया यही है।

हम बद नहीं है कहते उनके मुक़द्दसों को,
तालीम में हमारी हुक्मे ख़ुदा यही है।

हम को नहीं सिखाता वह पाक बद ज़ुबानी
तक़्वा की जड़ यही है सिद्क़ो सफ़ा यही है

पर आर्यों के दीं में गाली भी है इबादत
कहते हैं सब को झूठे क्या इत्तिक़ः यही है

जितने नबी थे आए मूसा हो या कि ईसा,
मक्कार हैं वे सरे इनकी निदा यही है।

इक वेद है जो सच्चा बाकी किताबें सारी,
झूठी हैं और जाली इक राहनुमा यही है।

यह है ख़याल इनका पर्वत बनाया तिनका,
पर क्या कहें जब उनका फ़हमो ज़का यही है।

कीड़ा जो दब रहा है गोबर की तह के नीचे
उस के गुमां में उसका अर्ज़ो समां यही है

वेदों का सब ख़ुलासा हमने **नियोग** पाया
इन पुस्तकों की रू से कारज भला यही है

जिस **स्त्री** (पत्नी) को लड़का पैदा न हो **पिया** (पति) से
वेदों की रू से उस पर वाजिब हुआ यही है

जब है यही इशारा फिर उस से क्या है चारा
जब तक न होवें ग्यारह[11] लड़के रवा यही है

ईश्वर के गुण अजब हैं वेदों में ऐ अज़ीज़ो!
उसमें नहीं मुरव्वत हमने सुना यही है

देकर निजात-व-मुक्ति फिर छीनता है सब से
कैसा है वह दयालु जिसकी अता यही है

ईश्वर बना है मुंह से ख़ालिक़ नहीं किसी का
रूहें हैं सब अनादि फिर क्यों ख़ुदा यही है

रूहें अगर न होतीं ईश्वर से कुछ न बनता
उसकी हुकूमतों की सारी बिना यही है

उन का ही मुंह है तकता हर काम में जो चाहे
गोया वे बादशह हैं उनका गदा यही है

अलक़िस्सा आर्यों के वेदों का यह ख़ुदा है
उनका है जिस पे तकियः वह बे नवा यही है

ऐ आर्यो कहो अब ईश्वर के हैं यही गुण
जिस पर हो नाज़ करते बोलो वह क्या यही है?

वेदों को शर्म करके तुम ने बहुत छुपाया
आख़िर को राज़बस्तः उस का खुला यही है

क़ुदरत नहीं है जिसमें वह ख़ाक का है ईश्वर
क्या **दीने हक़** के आगे ज़ोर आज़मा यही है

कुछ कम नहीं बुतों से यह हिन्दुओं का ईश्वर
सच पूछिए तो वल्लाह **बुत दूसरा** यही है

हम ने नहीं बनाईं ये अपने दिल से बातें
वेदों★ से ऐ अज़ीज़ो हम को मिला यही है

फ़ितरत हर इक बशर की करती है इस से नफ़रत
फिर आर्यों के दिल में क्योंकर बसा यही है

ये हुक्म वेद के हैं जिन का है यह नमूना
वेदों से आर्यों को हासिल हुआ यही है

★**हाशिया :-** इस स्थान पर वेद के शब्द से वह शिक्षा अभिप्राय है जो आर्य समाज वालों ने अपने विचार में वेदों के हवाले से प्रकाशित की है। अन्यथा स्मरण रखना चाहिए कि हम वेद की मूल वास्तविकता को ख़ुदा के हवाले करते हैं। हम नहीं जानते कि इन लोगों ने इसमें क्या बढ़ाया और क्या घटाया, जबकि हिन्दुस्तान और पंजाब में वेद के अनुकरण का दावा करने वाले सैकड़ों धर्म हैं। तो हम किसी विशेष समुदाय की ग़लती को वेद पर क्योंकर थोप सकते हैं। फिर यह भी सिद्ध है कि वेद भी अक्षरांतरित हो चुका है अत: अक्षरांतरण के कारण इस से किसी अच्छाई की आशा भी व्यर्थ है। इसी से

खुश-खुश अमल हैं करते औबाश सारे इस पर
सारे नियोगियों का इक आसरा यही है★

★**हाशिया :-** स्मरण रहे यहां वेद की शिक्षा से हमारा अभिप्राय वे शिक्षाएं तथा वे सिद्धान्त हैं जिनको आर्य लोग इस स्थान पर प्रकट करते हैं और कहते हैं कि नियोग की शिक्षा वेद में मौजूद है और उन के कथनानुसार वेद बुलन्द आवाज़ से कहता है कि जिसके घर में कोई सन्तान न हो या केवल लड़कियां हों तो उसके लिए यह आवश्यक बात है कि वह अपनी पत्नी को इजाज़त दे कि वह दूसरे पुरुष से सम्भोग करे और इस प्रकार अपनी मुक्ति के लिए लड़का प्राप्त करे और ग्यारह लड़के प्राप्त करने तक यह संबंध स्थापित रह सकता है। और यदि उसका पति कहीं सफर में गया हो तो स्वयं उसकी पत्नी नियोग की नीयत से किसी दूसरे पुरुष से अवैध संबंध पैदा कर सकती है ताकि इस ढंग से सन्तान प्राप्त कर ले। और फिर पति के सफर से वापस आने पर यह तुहफ़ा उसके सामने प्रस्तुत करे और उसको दिखाए कि तू तो माल प्राप्त करने गया था परन्तु मैंने तेरे पीछे यह माल कमाया है। तो बुद्धि और मानवीय स्वाभिमान यह नहीं मान सकता कि यह निर्लज्जता का तरीक़ा वैध हो सके, और क्योंकर वैध हो हालांकि उस पत्नी ने अपने पति से तलाक़ प्राप्त नहीं की और उस के निकाह के बंधन से उसे आज़ादी प्राप्त नहीं हुई। अफ़सोस बल्कि हज़ार अफ़सोस कि ये वे बातें हैं जो आर्य लोग वेद से सम्बद्ध करते हैं परन्तु हम नहीं कह सकते कि वास्तव में यही शिक्षा वेद की है। संभव है कि हिन्दुओं के कुछ योगी जो ब्रह्मचारी रहते हैं और अन्दर ही अन्दर काम-भावनाएं उनको पराजित कर लेती हैं उन्होंने ये बातें स्वयं बना कर वेद की ओर सम्बद्ध कर दी हों या अक्षरांतरण के तौर पर वेद में सम्मिलित कर दी हों। क्योंकि अन्वेषक पंडितों ने लिखा है कि वेदों पर एक समय वह भी आया है कि उनमें बड़ा अक्षरांतरण किया गया है और उनके बहुत से पवित्र मामले परिवर्तित किए गए हैं अन्यथा बुद्धि स्वीकार नहीं करती कि वेद ने ऐसी शिक्षा दी हो और न कोई सत्प्रकृति स्वीकार करती

फिर किस तरह वे मानें तालीम पाक़ फ़ुर्क़ां
उनके तो दिल का रहबर और मुक़्तदा यही है

शेष हाशिया - है कि एक व्यक्ति अपनी पतिव्रता पत्नी को उसे तलाक़ दिए बिना शरीअत के अनुसार संबंध-विच्छेद करे। यों ही सन्तान-प्राप्ति के लिए अपने हाथ से उसको दूसरे से सम्भोग कराए क्योंकि यह तो भड़ुओं का काम है हां यदि किसी स्त्री ने तलाक़ प्राप्त कर ली हो और पति से उसका कोई संबंध न रहा हो तो इस स्थिति में ऐसी स्त्री को वैध है कि दूसरे से निकाह करे और उस पर कोई आरोप नहीं है और न उसके सतीत्व पर कोई धब्बा। अन्यथा हम उच्च स्वर में कहते हैं कि नियोग का परिणाम अच्छा नहीं है। जिस रूप में आर्य समाज के लोग एक ओर तो स्त्रियों के कानों तक पहुंचता रहता है और इन स्त्रियों के दिलों में जमा हुआ है कि हम दूसरे पुरुषों से भी सम्भोग कर सकती हैं। तो प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ऐसी बातों को सुनने से विशेष तौर पर जबकि वेदों के सन्दर्भ से वर्णन की जाती हैं स्त्रियों की अपवित्र कामभावनाएं जोश मारेंगी अपितु वे तो दस क़दम और भी आगे बढ़ेंगी और जबकि पर्दे का पुल भी टूट गया तो प्रत्येक समझ सकता है कि इन अपवित्र कामभावनाओं का सैलाब कहां तक घर बरबाद करेगा। अत: जगन्नाथ बनारस तथा कई स्थानों में इसके नमूने भी मौजूद हैं। काश! इस क़ौम में कोई समझदार पैदा हो। हमें यह भी समझ नहीं आता कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए सन्तान की आवश्यकता क्यों है। क्या ऐसे लोग जैसे पंडित दयानन्द था जिसने विवाह नहीं किया और न कोई सन्तान हुई मुक्ति से वंचित हैं? और ऐसी मुक्ति पर तो लानत भेजना चाहिए कि अपनी पत्नी का दूसरे से संभोग करा कर और उस से ऐसा कृत्य करा कर जो सामान्य संसार की दृष्टि में व्यभिचार के रूप में ही प्राप्त हो सकती है और इस अपवित्र कृत्य के अतिरिक्त उसकी मुक्ति का अन्य कोई माध्यम नहीं। और हम यह भी नहीं समझ सकते कि जो हज़ारों शक्तियां तथा विशेषताएं रूहों और शरीरों के कणों में हैं वे सब अनादि काल

जब हो गए हैं मुल्ज़म उतरे हैं गालियों पर
हाथों में जाहिलों के संगे जफ़ा यही है

रुकते नहीं हैं ज़ालिम गाली से एक दम भी
इन का तो शुग़्लो-पेशा सुब्हो मसा यही है

शेष हाशिया - से स्वयंभू हैं वे परमेश्वर से प्राप्त नहीं हुईं। फिर ऐसा परमेश्वर किस काम का है और उसके अस्तित्व का प्रमाण क्या है? और क्या कारण है कि उसको परमेश्वर कहा जाए? और पूर्ण आज्ञापालन के योग्य वह क्योंकर हो सकता है जबकि उस का प्रतिपालन पूर्ण नहीं और जिन शक्तियों को उसने स्वयं नहीं बनाया उनका ज्ञान उसे क्योंकर है और जबकि वह एक रूह पैदा करने की भी शक्ति नहीं रखता तो किन अर्थों से उसे सर्वशक्तिमान कहा जाता है जबकि उसकी शक्ति केवल जोड़ने तक ही सीमित है। मेरा हृदय तो यही गवाही देता है कि ये अपवित्र शिक्षाएं वेद में हरगिज़ नहीं हैं। परमेश्वर तो तब ही परमेश्वर रह सकता है जब प्रत्येक दानशीलता का स्रोत वही हो। वेदान्त वालों ने भी यद्यपि ग़लतियां कीं परन्तु थोड़े से सुधार से उनका धर्म आपत्तिजनक नहीं रहता, परन्तु दयानन्द का धर्म तो सर्वथा गन्दा है। मालूम होता है कि दयानन्द ने उन झूठे दार्शनिकों एवं तर्क शास्त्रियों का अनुकरण किया है जिन का वेद से कुछ भी संबंध न था अपितु वेद के छुपे हुए पक्के शत्रु थे। इसी कारण उसके धर्म में परमेश्वर का यथायोग्य सम्मान नहीं और न पवित्र हृदय योगियों की तरह परमेश्वर से मिलने के लिए तपस्याओं की शिक्षा है। केवल पक्षपात और ख़ुदा के पवित्र नबियों से वैर रखना तथा गालियां देना ही यह दुर्भाग्यशाली मनुष्य अपने शिष्यों को सिखा गया है अपितु यों कहो कि विष का एक प्याला पिला गया है। खुलासा यह कि हमारा सब आरोप दयानन्द के काल्पनिक वेदों पर है न कि ख़ुदा की किसी किताब पर- واللہ اعلم- इसी से

कहने को वेद वाले पर दिल हैं सब के काले
पर्दा उठा के देखो उन में भरा यही है★

फ़ितरत के हैं दरिन्दे मुर्दार हैं न ज़िन्दे
हर दम ज़ुबां के गन्दे क़हरे खुदा यही है⁕।

दीने ख़ुदा का आगे कुछ बन न आई आख़िर
सब गालियों पे उतरे दिल में उठा यही है।

शर्मो हया नहीं है आखों में उनकी हरगिज़
वे बढ़ चुके हैं हद से अब इन्तिहा यही है

हमने है जिसको माना क़ादिर है वह तवाना
उसने है कुछ दिखाना उस से रजा यही है

★**हाशिया :-** यदि इनमें ऐसे लोग भी हैं जो ख़ुदा के पवित्र नबियों को गालियां नहीं देते और योग्यता और सभ्यता रखते हैं वे हमारे वर्णन से बाहर हैं। इसी से

⁕**हाशिया :-** स्मरण रहे कि यह हमारी राय उन आर्य समाज वालों के बारे में है जिन्होंने अपने विज्ञापनों, पुस्तकों और अखबारों के माध्यम से अपनी गन्दे आचरण का प्रमाण दे दिया है और ख़ुदा के पवित्र नबियों हो हज़ारों गालियां दी हैं। जिन के अख़बार और पुस्तकें हमारे पास मौजूद हैं परन्तु शालीन प्रकृति के लोग इस स्थान पर हमारे अभिप्राय नहीं हैं और न वे ऐसे तरीक़े को पसन्द करते हैं। इसी से।

उन से दोचार होना इज़्ज़त है अपनी खोना
उन से मिलाप करना राहे रिया यही है

पस ऐ मेरे प्यारो उक़्बा को मत बिसारो
इस दीं को पाओ यारो बदरुद्दुजा यही है

मैं हूं सितम रसीदः उन से जो हैं रमीदः
शाहिद है आबे दीदः वाक़िफ़ बड़ा यही है

मैं दिल की क्या सुनाऊं किस को यह ग़म बताऊं
दुख-दर्द के हैं झगड़े मुझ पर बला यही है

दीं के ग़मों ने मारा अब दिल है पारः पारः
दिलबर का है सहारा वर्ना फ़ना यही है

हम मर चुके हैं ग़म से क्या पूछते हो हम से
उस यार की नज़र में शर्ते वफ़ा यही है

बरबाद जाएंगे हम गर वह न पाएंगे हम
रोने से लाएंगे हम दिल में रजा यही है

वह दिन गए कि रातें कटती थीं करके बातें
अब मौत की हैं घातें ग़म की कथा यही है

जल्द आ प्यारे साक़ी अब कुछ नहीं है बाक़ी
दे शर्बते तलाक़ी हिर्सो हवा यही है

शुकरे ख़ुदाए रहमां जिसने दिया है क़ुर्आं
ग़ुन्चे थे सारे पहले अब गुल खिला यही है

क्या वस्फ़ उसके कहना हर हर्फ़ उसका गहना
दिलबर बहुत हैं देखे दिल ले गया यही है

देखीं हैं सब किताबें मुज्मल हैं जैसी ख़्वाबें
ख़ाली हैं उनकी क़ाबें **ख़्वाने हुदा** यही है

उसने ख़ुदा मिलाया वह यार उस से पाया
रातें थीं जितनी गुज़रीं अब दिन चढ़ा यही है

उसने निशां दिखाए तालिब सभी बुलाए
सोते हुए जगाए बस हक़नुमा यही है

पहले सहीफ़े सारे लोगों ने जब बिगाड़े
दुनिया से वे सिधारे नौशा नया यही है

कहते हैं हुस्ने यूसुफ़ दिलकश बहुत था लेकिन
खूबी-व-दिलबरी में सब से सिवा यही है

यूसुफ़ तो सुन चुके हो इक चाह में गिरा था
यह चाह से निकाले जिसकी सदा यही है

इस्लाम के महासिन क्योंकर बयां करूं मैं
सब खुश्क बाग़ देखे फूला-फला यही है

हर जा ज़मीं के कीड़े दीं के हुए हैं दुश्मन
इस्लाम पर ख़ुदा से आज इब्तिला यही है

थम जाते हैं कुछ आंसू यह देखकर कि हरसू
इस ग़म से सादिक़ों का आहो बुका यही है

सब मुश्रिकों के सर पर यह दीं है एक खंजर
यह शिर्क से छुड़ावे उनको अज़ा यही है

क्यों हो गए हैं इसके दुश्मन ये सारे गुमराह
वह रहनुमा है राज़े, चूं-व-चिरा यही है

दीं ग़ार में छुपा है इक शोर कुफ़्र का है
अब तुम दुआएं कर लो ग़ारे-हिरा यही है

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद स. दिलबर मेरा यही है

सब पाक हैं पयम्बर इक दूसरे से बेहतर
लेक अज़ ख़ुदाए बरतर ख़ैरुलवरा यही है

पहलों से खूबतर है खूबी में इक क़मर है
उस पर हर इक नज़र है बदरुद्दुजा यही है

पहले तो रह में हारे पार उस ने हैं उतारे
मैं जाऊं उसके **वारे** (क़ुर्बान) बस ना ख़ुदा यही है

पर्दे जो थे हटाए अन्दर की रह दिखाए
दिल यार से मिलाए वह आशना यही है

वह यारे लामकानी वह दिल्बरे निहानी,
देखा है हमने उससे बस रहनुमा यही है।

वह आज शाहे दीं है वह ताज-ए-मुरसलीं है,
वह तय्यबो अमीं है उसकी सना यही है।

हक़ से जो हुक्म आए उसने वह कर दिखाए
जो राज़ थे बताए नेमुल अता यही है

आंख उसकी दूरबीं है दिल यार से क़रीं है
हाथों में शम्मा दीं है ऐनुज़्ज़िया यही है

जो राज़े दीं थे भारे उसने बताए सारे
दौलत का देने वाला फ़र्मारवा यही है

उस नूर पर फ़िदा हूँ उसका ही मैं हुआ हूँ,
वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फैसला यही है।

वह दिलबरे यगाना इल्मों का है ख़ज़ाना,
बाक़ी है सब फ़साना सच बे ख़ता यही है।

सब हमने उस से पाया शाहिद है तू ख़ुदाया
वह जिसने हक़ दिखाया वह महलिक़ा यही है

हम थे दिलों के अंधे सौ[100] सौ[100] दिलों पे फ़न्दे
फिर खोले जिसने **जन्दे**★ (ताले) वह मुज्तबा यही है

ऐ मेरे रब्बे रहमां तेरे ही हैं ये इहसां
मुश्किल हो तुझ से आसां हरदम रजा यही है

★**हाशिया :-** जन्दे से अभिप्राय यहां ताला है। चूंकि यहां कोई शायरी दिखाना अभीष्ट नहीं और न मैं यह नाम अपने लिए पसन्द करता हूं। इसलिए कुछ जगह पर मैंने पंजाबी शब्द प्रयोग किए हैं और हमें केवल उर्दू से कुछ मतलब नहीं। असल मतलब सच बात को दिलों में डालना है शायरी से कुछ संबंध नहीं है। इसी से।

ऐ मेरे यारे जानी ख़ुदकर तू मेहरबानी!
वर्ना बलाए दुनिया इक अज़दहा यही है

दिल में यही है हरदम तेरा सहीफ़ा चूमूं
क़ुर्आं के गिर्द घूमूं काबः मेरा यही है

जल्द आ मेरे सहारे ग़म के हैं बोझ भारे
मुंह मत छुपा प्यारे मेरी दवा यही है

कहते हैं जोशे उल्फ़त यकसां नहीं है रहता
दिल पर मेरे प्यारे हर दम घटा यही है

हम ख़ाक में मिले हैं शायद मिले वह दिलबर
जीता हूं इस हवस से मेरी ग़िज़ा यही है

दुनिया में इश्क़ तेरा बाक़ी है सब अंधेरा
माशूक़ है तू मेरा इश्क़े सफ़ा यही है

मुश्ते ग़ुबार अपना तेरे लिए उड़ाया
जब से सुना कि शर्ते महरो वफ़ा यही है

दिलबर का दर्द आया हर्फ़े ख़ुदी मिटाया
जब मैं मरा जिलाया जामे बक़ा यही है

इस इश्क़ में मसाइब सौ[100] सौ[100] हैं हर क़दम में
पर क्या करूं कि उसने मुझ को दिया यही है

हर्फ़े वफ़ा न छोड़ूं उस अहद को न तोड़ूं
उस दिलबरे अज़ल ने मुझ को कहा यही है

जब से मिला वह दिलबर दुश्मन हैं मेरे घर घर
दिल हो गए हैं पत्थर क़द्रो कज़ा यही है

मुझ को है वे डराते फिर-फिर के दर पे आते
तेग़-व-तबर दिखाते हर सू हवा यही है

दिलबर की रह में यह दिल डरता नहीं किसी से
हुशियार सारी दुनिया इक बावला यही है

इस राह में अपने क़िस्से तुम को मैं क्या सुनाऊं
दुख-दर्द के हैं झगड़े सब माजरा यही है

दिल करके पारः पारः चाहूं मैं इक नज़ारा
दीवाना मत कहो तुम अक़्ले रसा यही है

ऐ मेरे यारे जानी कर ख़ुद ही मेहरबानी
मत कह कि लन तरानी तुझ से रिजा यही है

फ़ुर्क़त भी क्या बनी है हर दम में जांकनी है
आशिक जहां पे मरते वह कर्बला यही है

तेरी वफ़ा है पूरी हम में है ऐब दूरी
ताअत भी है अधूरी हम पर बला यही है

तुझ में वफ़ा है प्यारे सच्चे हैं अहद सारे
हम जा पड़े किनारे जाए बुका यही है

हम ने न अहद पाला यारी में रख़्नः डाला
पर तू है फ़ज़्ल वाला हम पर खुला यही है

ऐ मेरे दिल के दर्मां हिज्रां है तेरा सोज़ां
कहते हैं जिसको दोज़ख़ वह जांगुज़ा यही है

इक दीं की आफ़तों का ग़म खा गया है मुझ को
सीने पे दुश्मनों के पत्थर पड़ा यही है

क्योंकर तबह वह होवे क्योंकर फ़ना वह होवे
ज़ालिम जो हक़ का दुश्मन वह सोचता यही है

ऐसा ज़माना आया जिसने ग़ज़ब है ढाया
जो पीसती है दीं को वह आसिया यही है

शादाबी-व-लताफ़त इस दीं की क्या कहूं मैं
सब ख़ुश्क हो गए हैं फूला-फला यही है

आंखें हर एक दीं की बेनूर हम ने पाईं
सुर्मे से मारिफ़त के इक सुर्मा सा यही है

लाले यमन भी देखे दुर्रे अदन भी देखे
सब जौहरों को देखा दिल में जचा यही है

इन्कार करके इस से पछताओगे बहुत तुम
बनता है जिस से सोना वह कीमिया यही है

पर आर्यों की आंखें अन्धी हुई हैं ऐसी
वे गालियों पे उतरे दिल में पड़ा यही है

बदतर हर एक बद से वह है जो बद ज़ुबां है
जिस दिल में यह नजासत बैतुल ख़ला यही है।

गो हैं बहुत दरिन्दे इन्सां के पोस्तीं में
पाकों का खूं जो पीवे वह भेड़िया यही है

किस दीं पे नाज़ इनको जो वेद★ के हैं हामी
मज़्हब जो फल से ख़ाली वह खोखला यही है

ऐ आर्यो यह क्या है क्यों दिल बिगड़ गया है
इन शोख़ियों को छोड़ो राहे हया यही है

★हाशिया :- स्मरण रहे कि वेद पर हमारा कोई प्रहार नहीं है। हम नहीं जानते कि इस की व्याख्या में क्या-क्या परिवर्तन किए गए हैं। आर्यवर्त के सैकड़ों धर्म अपनी आस्थाओं का वेदों पर ही आधार रखते हैं हालांकि वे एक दूसरे के शत्रु हैं और परस्पर उनका बहुत मतभेद है। अत: हम यहां वेद से अभिप्राय केवल आर्य समाज वालों की प्रकाशित शिक्षाएं और सिद्धान्त लेते हैं। इसी से

मुझ को हो क्यों सताते सौ इफ़्तिरा बनाते
बेहतर था बाज़ आते दूर अज़ बला यही है

जिस की दुआ से आख़िर **लेखू** मरा था कट कर
पंडित लेखराम
मातम पड़ा था घर-घर वह मीर्ज़ा यही है

अच्छा नहीं सताना पाकों का दिल दुखाना
गुस्ताख़ होते जाना उसकी जज़ा यही है

इस दीं की शानो शौकत या रब्ब मुझे दिखा दे
सब झूठे दीं मिटा दे मेरी दुआ यही है

कुछ शेरो शायरी से अपना नहीं तअल्लुक़
इस ढब से कोई समझे बस मुद्दआ यही है।

घोषणा

स्मरण रहे कि यह पुस्तक प्रकाशित करने की हमें कुछ भी आवश्यकता न थी परन्तु एक गन्दा अखबार जो क़ादियान से आर्यों की ओर से निकलता है जिसमें वे लोग हमेशा अपमान और गालियां देकर तथा इस्लाम धर्म के बारे में अपनी स्वाभाविक शत्रुता के कारण अशिष्ट शब्द बोल कर और साथ ही मुझे भी गालियां देकर लेखराम के स्थानापन्न हो रहे हैं उनके अखबार ने हमें विवश किया कि उनके झूठे आरोपों को इस पुस्तक में हम दूर कर दें और सिद्ध करें कि उनके भाई लाला शरमपत और लाला मलावामल निवासी क़ादियान वास्तव में मेरे बहुत से निशानों के गवाह हैं और उन पर क्या निर्भर है समस्त क़ादियान के आर्य और हिन्दू कुछ निशानों के चश्दीद गवाह हैं और फिर क़ादियान पर ही निर्भर नहीं लेखराम के मारे जाने की भविष्यवाणी एक ऐसी महाँ जाल भविष्यवाणी है जिस ने सम्पूर्ण पंजाब और हिन्दुस्तान के हिन्दू और आर्य समाज वाले इस महान निशान के गवाह कर दिए हैं। अब इन भविष्यवाणियों से इन्कार करना आर्यों के लिए संभव नहीं और इस बारे में क़लम उठाना केवल निर्लज्जता है और यदि वे इतने पर नहीं रुके तो फिर उनका सम्पूर्ण पर्दा खोल दिया जाएगा।

والسلام علی من اتبع الھدیٰ

लेखक

मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह मौऊद - क़ादियान